संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-21 अंक- 120
पृष्ठ 8
शुक्रवार
17 जनवरी 2025
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- पार्टी में दिखना चाहती....

विचार- कांग्रेस-आप की ....

खेल- क्या पत्नियों को साथ....

मोदी सरकार का कर्मचारियों को तोहफा

आठवें वेतन आयोग के गठन को मंजूरी

नई दिल्ली, एजेंसी। नए साल में केंद्र सरकार ने लाखों केंद्रीय कर्मचारियों को तोहफा दिया है। केंद्र सरकार ने गुरुवार को आठवें वेतन आयोग के गठन को मंजूरी देने का एलान कर दिया। गठन के बाद आयोग की रिपोर्ट के आधार पर कर्मचारियों की सैलरी और पेंशनधारकों के पेंशन में इजाफा होगा। लाभान्वित होने वाले लोगों की संख्या एक करोड़ से अधिक होगी। सूचना व प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में 8वें वेतन आयोग के गठन को मंजूरी देने का फैसला लिया गया। 7वें वेतन आयोग का गठन 2016 में किया गया था और इसका कार्यकाल 2026 में समाप्त होगा। वैष्णव ने आगे कहा कि आयोग के अध्यक्ष और दो सदस्यों की नियुक्ति जल्द ही की जाएगी। सरकार के इस कदम का इंतजार एक करोड़ से अधिक केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को था। ये अपने मूल वेतन, भत्ते, पेंशन और अन्य लाभों को संशोधित करने में मदद के लिए आयोग के गठन की आस लगाए थे। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा करते हुए कहा कि आयोग का गठन 2026 तक हो जाएगा। उन्होंने आगे दोहराया कि सातवें वेतन आयोग की सिफारिशें पहले ही लागू की जा चुकी हैं। सरकार बाद में सदस्यों सहित आयोग के अन्य विवरणों के बारे में जानकारी देगी। सातवें वेतन आयोग ने केंद्र सरकार के कर्मचारियों के वेतन ढांचे, भत्तों और पेंशन में महत्वपूर्ण बदलाव किए है। जिससे वेतन समानता सुनिश्चित हुई और सक्रिय कर्मचारियों और सेवानिवृत्त पेंशनभोगियों दोनों को लाभ हुआ। इसके बाद अब 8वें केन्द्रीय वेतन आयोग का गठन होने वाला है।

आठवां वेतन आयोग कब से होगा प्रभावी?

परंपरागत रूप से, केंद्रीय वेतन आयोग का गठन हर 10 साल में केंद्र सरकार के कर्मचारियों के वेतनमान, भत्ते और लाभों में बदलाव की समीक्षा और सिफारिश करने के लिए किया जाता है। यह आयोग महंगाई और आर्थिक स्थितियों जैसे कारकों को ध्यान में रखकर फैसला लेता है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की ओर से से गठित 28 फरवरी, 2014 को गठित 7वें वेतन आयोग ने 19 नवंबर, 2015 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसकी सिफारिशें 1 जनवरी, 2016 से लागू की गईं। इस समयसीमा के आधार पर, 8वें वेतन आयोग के 1 जनवरी, 2026 से प्रभावी होने की उम्मीद की जा रही है। पिछले आयोगों की तरह, इस वेतन आयोग की सिफारिशों के तहत वेतन में संशोधन होने की संभावना है। आयोग की सिफारिशों के आधार पर पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ते (डीए) और महंगाई राहत (डीआर) में समायोजन किया जाएगा।

● एक करोड़ से अधिक कर्मचारियों और पेंशनधारकों को मिलेगा लाभ

भाजपा ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिये जारी की नौ उम्मीदवारों की चौथी सूची

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने गुरुवार को दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिये नौ उम्मीदवारों की अपनी चौथी सूची जारी कर दी। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह की ओर से जारी सूची के अनुसार त्रिलोकपुरी, गोकुलपुर और बवाना सुरक्षित सीटों से क्रमशरू रविकांत उज्जैन, प्रवीण निमेष और रवींद्र कुमार (इंद्रराज) को उम्मीदवार बनाया गया है। पार्टी ने वजीरपुर से श्रीमती पूनम शर्मा, दिल्ली कैंट से भुवन तंवर, संगम विहार से चंदन कुमार चौधरी, ग्रेटर कैलाश से श्रीमती शिखा राय, शाहदरा से संजय गोयल और बाबरपुर से अनिल बिष्ट को प्रत्याशी घोषित किया है। भाजपा अब तक 68 सीटों पर अपने प्रत्याशियों के नाम घोषित कर चुकी है।

सिंगापुर के राष्ट्रपति का राष्ट्रपति भवन में पारंपरिक स्वागत

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत यात्रा पर आये सिंगापुर के राष्ट्रपति थर्मन शनमुगरत्नम का गुरुवार को राष्ट्रपति भवन में पारंपरिक स्वागत किया गया। उनका राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बातचीत करेंगे। राष्ट्रपति भवन में स्वागत के बाद सिंगापुर के राष्ट्रपति राजघाट गए जहां उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा , "एक करीबी साथी का स्वागत। सिंगापुर के राष्ट्रपति का भारत की पहली राजकीय यात्रा पर औपचारिक स्वागत और गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।" पोस्ट में कहा गया है कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रपति थर्मन का राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में गर्मजोशी से स्वागत किया। राष्ट्रपति थर्मन कल से दो दिन के लिए ओडिशा के दौरे पर भी जायेंगे। भारत और सिंगापुर के बीच मैत्री, विश्वास और आपसी सम्मान की लंबी परंपरा पर आधारित व्यापक सहयोग संबंध हैं। राष्ट्रपति थर्मन की यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों को और गति मिलने की उम्मीद है, जिसे पिछले साल सितंबर में प्रधानमंत्री मोदी की सिंगापुर यात्रा के दौरान व्यापक रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ाया गया था।

न्यायमूर्ति कृष्णन विनोद चंद्रन ने ली सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश पद की शपथ

नयी दिल्ली, एजेंसी। न्यायमूर्ति कृष्णन विनोद चंद्रन ने गुरुवार को उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश पद की शपथ ली। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने शीर्ष अदालत परिसर में आयोजित एक समारोह में उन्हें पद की शपथ दिलाई। इस अवसर पर शीर्ष अदालत के अन्य न्यायाधीशों, अनेक वरिष्ठ अधिवक्ताओं समेत कई गणमान्य लोग मौजूद थे। न्यायमूर्ति चंद्रन के शपथ ग्रहण के साथ ही शीर्ष अदालत की कुल निर्धारित 34 के मुकाबले न्यायाधीशों की संख्या 33 हो गई। न्यायमूर्ति चंद्रन इससे पहले मार्च 2023 से पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश थे। केंद्र सरकार ने सोमवार (13 जनवरी) को एक अधिसूचना जारी कर शीर्ष अदालत में न्यायाधीश पद पर उनकी नियुक्ति से संबंधित घोषणा की थी। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय के न्याय विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, राष्ट्रपति ने न्यायमूर्ति चंद्रन को कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया है। न्यायमूर्ति खन्ना की अध्यक्षता में न्यायमूर्ति बी आर गवई, न्यायमूर्ति सूर्य कांत, न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति अभय एस ओका वाले कॉलेजियम ने सात जनवरी, 2025 को सर्वसम्मति से उन्हें शीर्ष अदालत के न्यायाधीश पद पर पदोन्नत करने की सिफारिश की थी। कॉलेजियम ने अपनी बैठक में सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्ति के लिए पात्र उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों और वरिष्ठ अवर न्यायाधीशों के नामों पर विचार–विमर्श के बाद न्यायमूर्ति चंद्रन का चुनाव किया। मूल तौर पर केरल उच्च न्यायालय से आने वाले न्यायमूर्ति चंद्रन ने 11 वर्षों से अधिक समय तक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और एक वर्ष से अधिक समय तक एक बड़े उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया है। न्यायमूर्ति चंद्रन के नाम की सिफारिश करते समय कॉलेजियम ने इस तथ्य को ध्यान में रखा है कि केरल उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय की पीठ में कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। न्यायमूर्ति चंद्रन को आठ नवंबर 2011 को केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया था और 29 मार्च, 2023 को पटना में उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया था।

किसानों को नजरंदाज नहीं किया जा सकता : धनखड़

नयी दिल्ली, एजेंसी। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने किसानों की समस्याओं का समाधान खोजने का आह्वान करते हुए गुरुवार को कहा कि अन्नदाताओं की चिंताओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। श्री धनखड़ ने कर्नाटक के धारवाड़ में कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के अमृत महोत्सव और पूर्व छात्र मिलन समारोह के उद्घाटन समारोह में कहा कि राष्ट्रीय स्तर किसानों की समस्या पर तत्काल ध्यान देने तथा उन्हें आर्थिक सुरक्षा की आवश्यकता है। देश निरंतर प्रगति के पथ पर है और इसमें किसानों को पीछे नहीं छोड़ा जा सकता। श्री धनखड़ ने कहा कि किसानों की समस्या पर तत्काल राष्ट्रीय ध्यान देने की आवश्यकता है। किसानों को आर्थिक सुरक्षा की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, " जब किसानों की समस्याओं का समाधान खोजने की बात आती है तो समय की बहुत आवश्यकता होती है। सरकार काम कर रही है। हम चाहते हैं कि सभी लोग तालमेल के साथ काम करें, सकारात्मक सोच के साथ मिलकर समाधान खोजें।" राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर कृषि क्षेत्र के व्यापक प्रभाव पर श्री धनखड़ ने कहा कि कृषि आधारित उद्योग, कृषि उपज आधारित उद्योग, कपड़ा, खाद्य, खाद्य तेल और कई अन्य क्षेत्र समृद्ध हो रहे हैं और लाभ अर्जित कर रहे हैं। किसानों को लाभ को समान रूप से साझा करना चाहिए।

महू में होगी कांग्रेस की संविधान बचाओ रैली

नई दिल्ली, एजेंसी। बीआर अंबेडकर पर दिए गए बयान पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग को लेकर कांग्रेस 27 जनवरी को महू में श्जय बापू, जय भीम और जय संविधानश रैली आयोजित करेगी। कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने कहा कि 27 जनवरी को महू में श्जय बापू, जय भीम, जय संविधानश रैली का आयोजन किया जाएगा। गृह मंत्री अमित शाह के उस बयान को लेकर विभिन्न ब्लॉकों, जिलों और राज्यों में रैलियां आयोजित की जा रही हैं। उन्होंने डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर का अपमान किया है। महू रैली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और अन्य नेता मौजूद रहेंगे। जयराम रमेश ने कहा कि 27 जनवरी को महू में 'जय बापू, जय भीम, जय संविधान' रैली का आयोजन किया जाएगा। गृह मंत्री अमित शाह के उस बयान को लेकर विभिन्न ब्लॉकों, जिलों और राज्यों में रैलियां आयोजित की जा रही हैं, उन्होंने डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर का अपमान किया है। महू रैली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और अन्य नेता मौजूद रहेंगे।

संगम के स्नान घाटों पर हर एक श्रद्धालु ने बिताए औसतन 45 मिनट, आरएफ रिस्ट बैंड से हुआ खुलासा

प्रयागराज। प्रयागराज महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं में से प्रत्येक ने स्नान घाट पर औसतन 45 मिनट बिताए। रेडियो फ्रिक्वेंसी रिस्ट बैंड के जरिये जुटाए गए डाटा से यह खुलासा हुआ। इसके अलावा आरएफ रिस्ट बैंड से जुटाए गए डाटा का उपयोग मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की कुल संख्या की गिनती में भी काम आई। महाकुंभ मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की वास्तविक संख्या पता लगाने के लिए इस बार तीन तरीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इनमें से एक आरएफ रिस्ट बैंड डाटा एनालिसिस भी है। इसमें श्रद्धालुओं को अपनी कलाई में एक रिस्ट बैंड बांधने के लिए दिया गया। आरएफ आईडी चिप युक्त रिस्ट बैंड से एकत्रित किए गए डाटा से पता चला कि मेले में मकर संक्रांति व पौष पूर्णिमा पर आए श्रद्धालुओं में से प्रत्येक ने औसतन 45 मिनट का समय स्नान घाट पर बिताया। यह समय पहुंचने से लेकर स्नान के बाद घाट से वापसी में लगा। पुलिस अफसरों का कहना है कि घाट पर श्रद्धालुओं की ओर से औसतन बिताए गए समय का पता लगने से भीड़ प्रबंधन में मदद मिलेगी। इसी आधार पर मेले में श्रद्धालुओं के प्रवेश व निकास के संबंध में निर्णय लिया जा सकेगा। यह तय किया जा सकेगा कि कब सामान्य यातायात योजना से आवागमन कराया जाना है और कब आपातकालीन यातायात योजना लागू की जानी है। एसएसपी राजेश कुमार द्विवेदी ने बताया कि आरएफ रिस्ट बैंड डाटा एनालिसिस तकनीक से मिले परिणामों के जरिये भीड़ प्रबंधन में मदद मिलेगी। पौष पूर्णिमा और मकर संक्रांति पर्व के दौरान 200 से अधिक लोगों को भीड़ की धक्का–मुक्की में चोटें आई हैं। घायलों को मोच व हड्डी फ्रैक्चर होने की भी समस्या आई। इनमें से 19 मरीजों को सेक्टर–दो स्थित केंद्रीय अस्पताल में प्लास्टर चढ़ाया गया। इनमें छह से अधिक लोगों की चकर्ड प्लेट पर गिरने से कलाई में चोट आई। इसके अलावा सात लोगों का पैर फ्रैक्चर हुआ। वहीं, अन्य में कंधा खिसकना, कंधे की हड्डी, पसली, व कूल्हे का फ्रैक्चर होना शामिल है। अस्पताल के हड्डी रोग विभाग के सर्जन डॉ. विनय यादव ने बताया कि अधिकांश मरीजों को चोट भीड़ की धक्का–मुक्की होने की वजह से आई है। चार दिनों में रोडवेज की शटल बसों में तकरीबन पांच लाख यात्रियों ने मुफ्त यात्रा की। रविवार से शुरू हुई सेवा बुधवार रात 12 बजे तक जारी रही। इस अवधि में सर्वाधिक 2.50 लाख यात्रियों ने मकर संक्रांति पर सफर किया। यूपी रोडवेज के क्षेत्रीय प्रबंधक एमके त्रिवेदी ने बताया कि अब मौनी अमावस्या के एक दिन पहले शटल बसों में फ्री सफर की सौगात यात्रियों को मिलेगी। बृहस्पतिवार से इन बसों में सामान्य दिनों की तरह से यात्रियों को किराया देना होगा। सभी 200 ई बसें अपने निर्धारित रूटों पर संचालित होंगी। 1932 में प्रयागराज से लंदन के लिए विमान का संचालन हुआ था। इसके 93 वर्ष बाद बुधवार को प्रयागराज एयरपोर्ट से इंटरनेशनल फ्लाइट रवाना हुई। यह विमान अमेरिका की अरबपति महिला उद्यमी लॉरेन पॉवेल जॉब्स के लिए यहां पहुंचा। इस विमान ने भूटान के लिए उड़ान भरी। बताया जा रहा है कि जॉब्स अगले कुछ दिन भूटान में ही प्रवास करेंगी। महाकुंभ में इस बार कुछ देशों से प्रवासी भारतीय एवं विदेशी नागरिक विमान से सीधे प्रयागराज आ सकते हैं। इसी वजह से एयरपोर्ट पर पहली बार इमिग्रेशन विभाग के भी कर्मचारियों की तैनाती हुई है। नई टर्मिनल बिल्डिंग में ही इनकी तैनाती महाकुंभ मेला अवधि के लिए की गई है। इसी बीच रॉयल भूटान एयरलाइंस का विमान बुधवार सुबह जब लैंड हुआ तो तमाम कर्मचारी उसे देख अचंभित हो गए। इसके आने की खबर चुनिंदा लोगों को ही थी। बाद में मालूम पड़ा कि उक्त विमान से लॉरेन पॉवेल जॉब्स को रवाना होना है। कुछ ही देर में लॉरेन पॉवेल जॉब्स एयरपोर्ट पहुंचीं। वहां एयरपोर्ट निदेशक मुकेश उपाध्याय से उनकी मुलाकात हुई। इमिग्रेशन विभाग की औपचारिकता पूरी होने के बाद लॉरेन पॉवेल का विमान प्रयागराज से सीधे भूटान के लिए रवाना हो गया। ब्रिटिश हुकूमत के दौरान प्रयागराज से इंटरनेशनल विमान संचालित हुआ करते थे। 1932 तक यहां से लंदन के लिए सीधी फ्लाइट थी। फिलहाल 93 वर्ष के अंतराल के बाद प्रयागराज एयरपोर्ट से बुधवार 15 जनवरी को इंटरनेशनल फ्लाइट संचालित हुई। हालांकि, इस विमान से सिर्फ लॉरेन पॉवेल जॉब्स और उनके कुछ सहयोगी ही रवाना हुए।

आईआईटी बांबे से की इंजीनियरिंग की पढ़ाई...दो लाख महीने की नौकरी ठुकराकर बने नागा संन्यासी

प्रयागराज। आईआईटी बांबे से एयरो स्पेस की पढ़ाई और दो लाख महीने की नौकरी ठुकराकर अभय सिंह नागा संन्यासी बन गए। उनके इंजीनियरिंग से नागा संन्यासी बनने की वजह से जूना अखाड़ा चर्चा का विषय बना हुआ है। महाकुंभ को कवर करने आए देश भर के मीडिया कर्मियों की उनके शिविर में तांता लगा हुआ है। वह बताते हैं कि जब वह अपने घर में ध्यान करते थे तो उनके परिवार के लोग उन्हें पागल बताकर पुलिस को सौंप दिया। उसके बाद से वह संन्यासी बनने का मन बना लिया।

अभय सिंह मूलरूप से हरियाणा के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि वह बांबे आईआईटी से एयरो स्पेस से इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। उन्हें जर्मनी में दो लाख महीने की नौकरी मिल रही थी, लेकिन महादेव के प्रति अपार प्रेम होने की वजह वह उस नौकरी को ठुकरा दिए। इसके अलावा वह प्रोडक्ट डिजाइन एनिमेशन का भी कोर्स किया। इतनी पढ़ाई करने के बाद भी उनका मन अध्यात्म की ओर ही भागता रहता था। घर में घंटों ध्यान करते थे और परिवार के लोगों को भी अध्यात्मिक बातें बताते थे। उन्होंने अपने परिवार वालों पर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके इस हरकत से घर वालों को बहुत चीढ़ हो रही थी क्यों कि उन्हें आस्था में भरोसा नहीं था। एक दिन वह घर में ध्यान कर रहे थे उसी दौरान उनके परिवार वाले पुलिस को फोन कर दिए और पागल बताकर उन्हें सौंप दिया। इसके बाद से उनका परिवार से मोह भंग हो गया और वह संन्यासी बनने का मन बना लिए। उन्होंने बताया कि वह 2000 किमी पैदल चलकर चारों धाम की यात्रा कर चुके हैं। वह अपने साथ एक डायरी रखते हैं, जिसमें वह पंच कोष के बारे में लिखा है। पहला आनंद कोष है जिसको समझाते हुए बताया कि आनंद कोष वह है जिसमें कोई बनावटी न हो, बिल्कुल जैसा का तैसा दिखाया या बताया जाय, दूसरा विज्ञान कोष, जिसमें हम अलग–अलग चीजों में फर्क को समझ पाते हैं। तीसरा मनोमय कोष, इस कोष में हम किसी चीज को देखकर याद कर लेते हैं। चौथा प्राणमय कोष, इसके अंतर्गत हमारी शारीरिक गति विधि आती है। अंतिम और पांचवा अन्न कोष, इस कोष में हम किसी चीज को खाकर उसके बारे में महसूस करते हैं।

इक नूतन शहर बसाया है

आ जाओ साधू सन्त सभी, अब माघ महीना आया है।
संगम की धरती ने फिर से, इक नूतन शहर बसाया है।
कल–कल करती गंगा बहती,कल–कल करती यमुना बहती।
इसकी युति से इस धरा का यह,पावन जल कहलाता है।

वात्सल्य भाव ले गंगे माँ,फूलों को छू ,तुम बहती हो।
संगम पर संगम की लहरों से,अमृत वर्षण करती हो।

जो भी पीकर जल गया कभी,वह लौट–लौट फिर आया है।
जिसमें हैं सारे पर्व निहित उसमें कटु नीर नहीं बहता।

इसमें सुखकर सब लहरों का,इक अद्भुत–सा संगम रहता।

सबने ही गंगे की महिमा का,अनुपम अलख जगाया है।
केवट हर्षित, पंडे हर्षित,साधू हर्षित, जोगी हर्षित।
संगम की पुण्य सलिल लहरें,हर्षित–हर्षित, नर्तित–नर्तित।
जो भी आया इस नगरी में,उसका ही मन हर्षाया है।

डॉ०प्रदीप चित्रांशी
प्रयागराज

हेलीकॉप्टर कंपनी के सीईओ समेत तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज, अनुबंध की शर्तो के उल्लंघन का आरोप

प्रयागराज । पौष पूर्णिमा के दिन तय समय पर पुष्पवर्षा नहीं करने के मामले में प्रदेश सरकार की ओर से बड़ी कार्रवाई की गई है। प्रकरण में हेलीकॉप्टर कंपनी के सीईओ समेत तीन अधिकारियों के खिलाफ अनुबंधा की शर्तों का उल्लंघन करने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया गया है। मेला कोतवाली में यह एफआईआर नागरिक उड्डयन विभाग उत्तर प्रदेश ने लिखाई है।विभाग के प्रबंधक परिचालन केपी. रमेश की ओर से इस मामले में तहरीर दी गई है। उन्होंने पुलिस को बताया कि महाकुंभ मेला के प्रत्येक शाही स्नान में विगत आयोजन की भांति पुष्पवर्षा कराए जाने के लिए मेसर्स हेरीटेज एविएशन प्राइवेट लिमिटेड कंपनी से 13 व 14 जनवरी 2025 के लिए शर्तों एवं प्रतिबन्धों के साथ हेलीकॉप्टर सेवा के लिए अनुबंधा किया गया है। इसी के क्रम में कंपनी ने प्रयागराज में अपना एक हेलीकॉप्टर पोजीशन कराया। आरोप है कि निदेशालय को प्राप्त सूचना के अनुसार, कंपनी ने निदेशालय को बिना सूचना दिएध्अनुमति प्राप्त किए ही अपने हेलीकॉप्टर को किसी अन्य काम से अयोध्या भेज दिया। यह अनुबन्ध की शर्तों एवं प्रतिबन्धों का उल्लंघन है। फर्म द्वारा किए गए इस कृत्य से शासकीय कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हुआ जो किसी भी प्रकार से अक्षम्य है। मेला कोतवाली पुलिस ने इस मामले में कंपनी के सीईओ रोहित माथुर, प्रबंधक परिचालन परम और पायलट कैप्टन पुनीत खन्ना के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। फिलहाल इस मामले में पुलिस अधिकारी कुछ बोलने को तैयार नहीं हैं।

सूत्रों का कहना है कि अनुबंधित कंपनी की ओर से हेलीकॉप्टर अयोध्या भेजे जाने के कारण पौष पूर्णिमा के दिन सुबह के समय पुष्पवर्षा नहीं कराई जा सकी थी। बाद में दूसरी कंपनी का हेलीकॉप्टर बुलाया गया और फिर शाम को पुष्पवर्षा कराई गई। इस मामले को शासन ने बेहद गंभीरता से लिया और कार्रवाई के लिए निर्देशित किया। जिस पर मुकदमा दर्ज कराया गया।

भाजपा नेता को पुलिस ने थाने में बंद करके पीटा, आधी रात दो विधायक, महापौर, एमएलसी धरने पर बैठे

प्रयागराज। भाजपा अनुसूचित मोर्चा के प्रदेश सह–कोषाध्यक्ष मनोज पासी ने झूंसी थानेदार और अन्य पुलिसकर्मियों पर उनकी थाने में बंदकर पिटाई करने का आरोप लगाया। मामला तूल पकड़ा तो भाजपाई आक्रोशित हो उठे। रात में महापौर, दो विधायक, एमएलसी और जिलाध्यक्ष समेत भारी पार्टी कार्यकर्ताओं ने झूंसी थाने का घेराव किया। डीसीपी अभिषेक भारती ने बताया कि घटना के बाद तथ्यों के आधार पर चमनगंज चौकी इंचार्ज संतोष कुमार सिंह, दरोगा शिवराम यादव, जग नारायण और मुख्य आरक्षी पारस यादव को निलंबित कर दिया गया है। साथ ही इनके खिलाफ विभागीय जांच बिठा दी गई है। इसके अलावा झूसी थाना प्रभारी उपेंद्र प्रताप सिंह के खिलाफ भी जांच के आदेश दिए गए हैं। सूचना पर एसीपी विमल किशोर मिश्र मौके पर पहुंचे तो सभी ने उनसे वार्ता से इन्कार कर दिया। तब डीसीपी नगर अभिषेक भारती झूंसी थाने पहुंचे। देर रात तक पुलिस अफसरों और भाजपाइयों में वार्ता चलती रही। कोई नतीजा नहीं निकल सका था। भाजपाई झूंसी थानेदार के निलंबन की मांग कर रहे थे। यमुनापार के पूर्व जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने बताया कि बुधवार को प्रदेश सह कोषाध्यक्ष मनोज पासी के भाई की दीवार बनाने से रोकने झूंसी थाने की पुलिस गई थी। इस पर मनोज पासी व उनके भाई को गाली दी गई। कुछ देर बाद मनोज पासी झूंसी थाने में गालीगलौज को लेकर पूछने थानेदार उपेंद्र प्रताप सिंह के पास पहुंचे तो उन्होंने अन्य पुलिसकर्मियों के साथ मिलकर उनकी लात–घूसों से पिटाई कर दी। पुलिस की पिटाई से वह बेहोश हो गए। बाद में उन्हें अस्पताल ले जाया गया। बाद में मनोज पासी ने एक वीडियो के जरिये आपबीती बताई। वीडियो में बताया गया कि उनके सिर के बाल नोचकर पिटाई की गई। वीडियो वायरल होने के साथ ही जानकारी भाजपाइयों को हुई तो खलबली मच गई। रात आठ बजे महापौर गणेश केसरवानी, फूलपुर विधायक दीपक पटेल, उत्तरी विधायक हर्षवर्धन वाजपेयी, एमएलसी सुरेंद्र चौधरी, गंगापार अध्यक्ष कविता पटेलए पूर्व एमएलसी निर्मला पासवान समेत सैकड़ों कार्यकर्ता झूंसी थाने पहुंच गए। एसीपी विमल किशोर मिश्र थाने पहुंचे तो महापौर और विधायकों ने उनसे बात करने से ही मना कर दिया। तब डीसीपी नगर अभिषेक भारती झूंसी थाने पहुंचे। भाजपाई झूंसी थानेदार उपेंद्र प्रताप सिंह समेत अन्य पुलिसकर्मियों के निलंबन की मांग कर रहे थे। भाजपा नेताओं को पीटे जाने का प्रकरण बृहस्पतिवार को यहां पहुंच रहे डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के सामने उठेगा। पार्टी नेताओं ने इसकी तैयारी कर ली है। पहले प्रीतम नगर के निवर्तमान मंडल अध्यक्ष, फिर भाजपा अनुसूचित मोर्चा के प्रदेश कोषाध्यक्ष मनोज पासी की झूंसी थाने में हुई पिटाई के मामले ने तूल पकड़ लिया है। दोनों बार भाजपा नेता थानों का घेराव कर चुके हैं। पुलिस के इस रवैये से कार्यकर्ता नाराज हैं। डिप्टी सीएम दोपहर तीन बजे महाकुंभनगर के परेड ग्राउंड में संस्कृति विभाग की ओर से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में पहुंचेंगे। शाम 4रू15 बजे पार्टी पदाधिकारियों से मिलेंगे। यहीं पुलिस की पिटाई का मामला उठेगा। पिछले माह भी धूमनगंज पुलिस ने पार्टी के मंडल अध्यक्ष को पीट दिया था। इसके बाद मेयर समेत कई पदाधिकारियों ने थाना घेरा था। इसके बाद दो पुलिसकर्मी निलंबित किए गए थे। मनोज पासी की पिटाई में देर रात को झूंसी थाने में दो दरोगा और दो सिपाहियों के खिलाफ कार्रवाई की गई। इसके साथ ही डीसीपी नगर अभिषेक भारती ने मामले की जांच एसीपी विमल किशोर मिश्र को सौंपी है। एसीपी विमल किशोर मिश्र ने बताया कि मारपीट के मामले में आरोपी दो दरोगा और दो सिपाहियों को निलंबित कर दिया गया है। एसओ उपेंद्र प्रताप सिंह के मामले की जांच कर कार्रवाई का आश्वासन दिया गया था।

अखाड़ा सेक्टर में साधुओं ने दो बिजली ठेकेदारों समेत आठ को पीटा, आधी रात अफसर पहुंचे मौके पर

प्रयागराज। अखाड़ा सेक्टर में बुधवार देर रात साधुओं ने बिजली विभाग के दो

ठेकेदारों–मुंशियों समेत 15 से अधिक लोगों को पीट दिया। आरोप है कि पीटने के लिए लाठियां पुलिस कर्मियों से छीनी गईं। हंगामा होने पर आधी रात मेला अफसर भी पहुंचे। ठेकेदार ने झूंसी थाने में साधुओं के खिलाफ तहरीर दी है। बिजली विभाग के स्टोर में यह हंगामा बिजली चले जाने पर हुआ। ठेकेदार आशीष द्विवेदी का आरोप है कि काशी मंदिर सेवा अन्नक्षेत्र समिति के शिविर से सात–आठ साधु मोटरसाइकिल और कार से आए। मुंशी दिव्यांशु शुक्ल से बिजली जाने का कारण पूछा। दिव्यांशु के मुताबिक, साधुओं को बताया कि 18 हजार वोल्ट की लाइन ट्रिप कर गई है। जल्द ही बिजली आ जाएगी। लेकिन, एक साधु ने उन्हें धकिया दिया। बचाने आए मुंशी शुभम मिश्रा और रमन तिवारी को भी पीट दिया। खबर पाकर आए ठेकेदार आशीष, उनके भाई गुलाब द्विवेदी को भी दूसरे शिविरों से आए 25–30 साधुओं ने पीट दिया। पुलिस मूकदर्शक बनी रही। इससे ठेकेदारों समेत आठ लोगों का सिर फट गया। ठेकेदार ने झूंसी थाने को तहरीर दी है। देररात एडिशनल एसपी मेला मनीष सोनकर, एडीएम कुंभ विवेक चतुर्वेदी, चीफ इंजीनियर (विद्युत) वीके सिंह, अधीक्षण अभियंता मनोज गुप्ता और एक्सईएन अनूप सिन्हा भी मौके पर पहुंचे। अधिशासी अभियंता अनूप सिन्हा का कहना है कि घटना की रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को देंगे। प्रशासन इस पर उचित निर्णय लेगा। वहीं, ठेकेदार आशीष द्विवेदी का कहना है कि कार्रवाई नहीं हुई तो बृहस्पतिवार से धरने पर बैठेंगे। महंत बालक दास का कहना है कि बिजली कटने पर कुछ संन्यासी बिजली विभाग के स्टोर गए थे। वहां मौजूद ठेकेदार से लेकर मुंशी तक शराब के नशे में धुत थे। उन्होंने साधु–संतों पर हमला किया है। इसमें कई साधु घायल हुए हैं। इसकी तहरीर दी जाएगी। साधुओं ने किसी को नहीं पीटा।

पुलिस ने रास्ता बंद किया तो सैकड़ों की छूटी ट्रेन, 13,499 आरक्षित टिकट हुए निरस्त

प्रयागराज। महाकुंभ के प्रथम अमृत स्नान के बाद वापसी करने वाले श्रद्धालुओं की राह बहुत मुश्किल रही। जगह–जगह पुलिस द्वारा श्रद्धालुओं को रोक लिए जाने की वजह से कई लोग समय से स्टेशन नहीं पहुंच सके। इस वजह से सैकड़ों यात्रियों की ट्रेन छूट गई। प्रयागराज से 13,499 यात्रियों के आरक्षित टिकट निरस्त हुए। मंगलवार की रात प्रयागराज जंक्शन पर

यात्रियों की भीड़ बढ़ जाने की वजह से हीवेट रोड चौराहा, जानसेनगंज चौराहा आदि स्थानों पर पुलिस ने बैरिकेडिंग लगाकर रास्ता रोक दिया। इस दौरान एनाउंसमेंट किया जाता रहा कि अभी जंक्शन की तरफ न जाएं क्योंकि वहां भीड़ काफी है। रोके गए श्रद्धालुओं में से बहुत से ऐसे लोग रहे जिनका प्रयागराज एक्सप्रेस, हमसफर, बीकानेर, देहरादून एक्सप्रेस आदि ट्रेनों में रिजर्वेशन था। तमाम यात्री अपने आरक्षित टिकट पुलिस कर्मियों को दिखाते रहे। यह भी कहा कि उन्हें जाने दिया जाए। नहीं तो उनकी ट्रेन छूट जाएगी, लेकिन पुलिस कर्मियों ने उनकी एक न सुनी। नतीजा यह रहा कि काफी लोगों की ट्रेन छूट गई। राजस्थान के सांगानेर से आए पीआर मीणा ने कहा कि वह संगम से पैदल चलकर आए थे। उन्हें सूबेदारगंज से ट्रेन पकड़नी थी। पुलिस को बताया भी लेकिन उन्हें घंटों रोके रखा गया और ट्रेन छूट गई। इसी तरह मोहननगर गाजियाबाद की मंजू शर्मा के साथ कुल चार लोग थे। उन्हें भी जंक्शन से हमसफर पकड़नी थी। मंजू ने टिकट भी दिखाई, लेकिन ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों ने कहा कि जब तक आदेश नहीं आ जाता तब तक रास्ता नहीं खोला जाएगा। इस आपाधापी में जंक्शन समेत शहर के स्टेशनों से चलने वाली तमाम ट्रेनों के 13,499 यात्रियों को अपने आरक्षित टिकट निरस्त करवाने पड़े। इसमें प्रतीक्षा सूची वाले भी टिकट रहे। इस दौरान रेलवे ने रिफंड के रूप में 1.17 करोड़ रुपये का भुगतान किया।

अखाड़े के साथ मॉडल हर्षा के अमृत स्नान पर भड़के संत, भगवा वस्त्र पहनने पर शंकराचार्य नाराज

प्रयागराज। यूट्यूबर व मॉडल हर्षा रिछारिया के अखाड़े के साथ भगवा कपड़े पहनकर अमृत स्नान को लेकर महाकुंभ नगर

में संतों में विवाद छिड़ा है। जहां एक ओर कुछ संतों ने इसे आपत्तिजनक करार देते हुए नाराजगी जताई वहीं, दूसरी ओर निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर कैलाशानंद गिरि ने इसे खारिज करते हुए कहा कि बिना वजह से इसको तूल देने की कोशिश हो रही है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर व मॉडल हर्षा रिछारिया ने मकर संक्रांति पर अमृत स्नान के दौरान निरंजनी अखाड़ा के महामंडलेश्वर कैलाशानंद के अनुयायियों के साथ भगवा कपड़ों में डुबकी लगाई थी। उनकी तस्वीरें और वीडियो कुछ देर में सोशल मीडिया पर वायरल हो गए। उनके स्नान के बाद से संतों ने भी अपनी नाराजगी जाहिर की। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने इसे सनातन धर्म का अपमान बताया। कहा, इसमें शामिल धर्मगुरु व संतों को प्रायश्चित्त करना चाहिए। भगवा वस्त्र पहनकर इस तरह के लोगों को शामिल नहीं करना चाहिए। उन्होंने इसे मार्केटिंग इवेंट ठहराया। शांभवी पीठाधीश्वर स्वामी आनंद स्वरूप ने कहा जिस प्रकार एक महामंडलेश्वर ने अपने रथ पर मॉडल को बैठाकर अमृत स्नान के लिए लेकर, यह अच्छी बात नहीं। उनको साध्वी के तौर पर प्रचारित करना भी गलत है। अन्य साधु–संतों ने भी इस पर नाराजगी जताई। इसको बेवजह तूल दिया जा रहा है। उनको संन्यास व साध्वी की कोई पदवी नहीं दी गई। उन्होंने सिर्फ गुरु दीक्षा ली है। जिस तरह हजारों अनुयायियों ने स्नान किया, उसी तरह उन्होंने भी स्नान किया। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। – आचार्य महामंडलेश्वर कैलाशानंद गिरि, निरंजनी अखाड़ा मैं कोई साध्वी नहीं हूं। साध्वी के लिए दीक्षा भी नहीं ली है। मैंने सिर्फ गुरु दीक्षा ली है। सनातन के काम को आगे बढ़ाना चाहती हूं। मुझे आध्यात्म की दुनिया अच्छी लगती है।

तीन किमी दंडवत परिक्रमा कर संगम स्नान करने पहुंचे दो भाई, संगम में डुबकी लगाकर पूरी की मनौती

प्रयागराज। सेक्टर–19 स्थित शंकराचार्य मार्ग पर बुधवार दोपहर धूल मिट्टी से सने दो भाई चकर्ड प्लेट पर दंडवत परिक्रमा करते हुए दिखे। इसी तरह दोनों परिक्रमा करते हुए करीब तीन

किमी दूरी तय कर संगम घाट पर पहुंचे और स्नान कर मनौती को पूरी की। इनकी कठिन तपस्या को देखकर ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मी रास्ते में खड़े वाहन और ठेले को हटवाते हुए नजर आए। मुरैना, मध्य प्रदेश निवासी राजकुमार ने बताया कि मकर संक्रांति पर 11 लोगों के साथ संगम स्नान करने आए थे, लेकिन भीड़ अधिक होने से यह परिक्रमा नहीं हो पाई थी, इसलिए बड़े भाई रमेश के साथ दंडवत परिक्रमा कर रहे हैं। वह सेक्टर–17 में रुके हुए थे और वही से परिक्रमा करते हुए आ रहे हैं। दंडवत परिक्रमा की वजह उन्होंने महादेव की इच्छा और गंगा मइया की भक्ति बताया। वह कहते हैं, भवानी मां कृपा है, इसलिए दर्द का पता नहीं चल रहा है। दोनों भाई हाथ में एक छोटा सा पत्थर लिए थे। लेटने के बाद उसी पत्थर से रास्ते में निशान लगाते थे और फिर खड़े होकर वहीं से दोबारा लेटते हुए परिक्रमा कर रहे थे।

'वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच के मासिक काव्य गोष्ठी में कवियों ने वाहवाही बटोरी'

विश्वनाथ , असम सवरिष्ठ नागरिक काव्य मंच कार्यक्रम का बुधवार को वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच की असम इकाई की नियमित काव्य गोष्ठी का आदरणीय नरेश नाज जी(संस्थापक)के मार्ग दर्शन में तथा आभा चौधरी जी के नेतृत्व में आभासी पटल के(वद सपदम) माध्यम से संपन्न किया गया । काव्य गोष्ठी के मुख्य अतिथि वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच के वैश्विक अध्यक्ष श्री एम एस जग्गी जी रहें। श्रीमती हेमलता गोलछा ने सरस्वती वंदना कर मंच को गौरवान्वित किया तथा श्री विनय कुमार बुद्ध जी ने मंच के सामने मुख्य अतिथि का परिचय रखा ।तदोपरांत मुख्य अतिथि ने अपना आशीष वचन मंच के सामने रखा और आभा चौधरी के संचालन और अध्यक्षता में काव्य गोष्ठी का शुभारंभ हुआ। काव्य गोष्ठी में सभी ने एक से बढ़कर एक कविताएं प्रस्तुत कर काव्य मंच में चार चांद लगा दिया। कभी गोष्ठी का शुभारंभ आदरणीय लकी दास की कविता द्वारा हुई। उन्होंने प्रकृति के ऊपर बहुत ही सुंदर कविता वाचन किया , तो वहीं अंजना जी ने एक दुल्हन के सपनों को चूर–चूर होते हुए बहुत ही मार्मिक कविता पाठ किया। हिंदी सेवी संतोष कुमार महतो जी ने मैं न जिऊं बिन प्रभु श्रीराम के कविता वचन कर प्रभु श्री राम के प्रति अपना भक्ति भाव प्रदर्शित किया , तो वही सूचित सिंह जी ने जीवन के उतार–चढ़ाव को बड़ी ही बारीकी से अपनी कविता द्वारा मंच के सामने प्रस्तुत किया ।जाकिर हुसैन जी ने सड़क जैसे निर्जीव वस्तु में सजीवता डालकर कविता को एक अलग ही मुकाम पर पहुंचा दिया ।हेमलता गोलछा जी ने अपनी बहुत ही सुंदर दोहावली मंच के सामने प्रस्तुत किया तो वही आज के काव्य गोष्ठी के मुख्य अतिथि आदरणीय एम एस जग्गी जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में मानवता को प्रतिष्ठित करने की बात कही। इनकी कविताएं मानव धर्म से उत्प्रोत रही और अंत में काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता कर रही आभा चौधरी जी ने अपनी सीरिया पर लिखिए अपनी एक कविता सुनकर मंच को भाव विभोर कर दिया। गोष्ठी के अंतिम पड़ाव में मुख्य अतिथि आदरणीय एमएस जग्गी जी ने अपने अनुभव मंच के साथ साझा करते हुए कहा कि इस मंच में आकर उन्हें बहुत अच्छा लगा तथा सभी कवियों के आगामी जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और अपना आशीर्वाद दिया। इसके बाद मंच की अध्यक्षता करने वाली आभा चौधरी जी ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए काव्य गोष्ठी की औपचारिक रूप से समापन की घोषणा की।

'प्रयाग लोकरंगोत्सव कार्यक्रम में कलाकारों ने शानदार प्रस्तुतियां दी'

'लोक रंगोत्सव में जागरूकता एवं मनोरंजन का अद्भुत समन्वय मुख्य–अतिथि रवीन्द्र कुशवाहा'

प्रयागराज। संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध रंगकर्मी स्वर्गीय अश्विनी अग्रवाल जी के स्मृति में इंडियन आर्ट एंड कल्चरल सोसाइटी के तत्वावधान में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के सहयोग से तृतीय प्रयाग लोकरंगोत्सव 2025 का आज द्वितीय एवं समापन दिवस रहा। यह कार्यक्रम जॉर्ज टाउन के आनंद बाल विद्या मंदिर स्कूल में सम्पन्न हुआ। संस्था ने अपने दो दिवसीय कार्यक्रम से दर्शकों का खूब मनोरंजन किया और जागरुकता जगायी। आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा. रवींद्र कुशवाहा सदस्य राज्य ललित कला अकादमी संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश रहे। आज की प्रथम प्रस्तुति वेदांशि नृत्यशाला के बच्चों की मनोहारी

शिव स्तुति रही। निर्देशिका संगीता के कलाकार नैनिका, सानवी, तथा हर्षिता ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। दूसरी प्रस्तुति इंडियन आर्ट एंड कल्चरल सोसाइटी द्वारा प्रस्तुत दिनेश भारती का नाटक डबल डोज रहा। प्रकाश परिकल्पना एवं निर्देशक सुबोध सिंह के कलाकार अविचल, अर्पिता, अनूप, रतीभान, अजय, श्रिया आदि ने अपने अभिनय से दर्शकदीर्घा से खूब तालियां बटोरी। रूप सज्जा मो. हामिद, वस्त्र विन्यास निकिता, पूनम, नेहा, खद्दुशी, ध्वनि संचालन आदित्य, जैद मार्क, मंच निर्माण हर्ष जायसवार, शिवम का रहा। पूरे कार्यक्रम का संचालन कौशिक भट्टाचार्य एवम अभिषेक सिंह ने किया।अंत में मुख्य अतिथि ने संस्था को ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन के लिए बधाई दी और शहर के विभिन्न संस्थाओं से भी ऐसे ही उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रमों के आयोजन की अपील की।

संस्था के संरक्षक तेजेंद्र सिंह तेजू ने कार्यक्रम को सफल बनाने में कलाकारों की पीठ थपथपाई। संस्था के अध्यक्ष कौशिक भट्टाचार्य ने दर्शकों को लोककला के प्रति जागरूकता के लिए उन्हें आभार व्यक्त किया।

बीएसए कॉलेज में दिव्यांग जन प्रतिभा खोज कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

मथुरा।– संकल्प 2024 ब्रेक द बैरियर का दीप प्रज्वलित कर मुख्य अतिथि सुभाष चन्द शर्मा प्रमुख सचिव दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग उत्तर प्रदेश ने मां सरस्वती के सामने दीप प्रज्वलित कर किया, वहीं मंच पर विशिष्ट अतिथि, सीडीओ मनीष मीणा, विशाल कुमार जिला दिव्यांग अधिकारी, डॉ गीतांजनी शर्मा सहित ठै। डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल ललित मोहन शर्मा मौजूद रहे।

दिव्यांगजन विभाग उत्तर प्रदेश के संयुक्त प्रावधान में संकल्प

2024 बाधाओ को तोड़ो नामक तीन दिवसीय कार्यक्रम बीएससी कॉलेज में आयोजित हो रहा है, इस कार्यक्रम में आगरा मंडल के सभी जिलों के दिव्यांग बालक बालिकाओं ने भाग लिया है आज कार्यक्रम में मशाल कार्यक्रम किट लॉन्च, मोटी वेशन सॉन्ग लॉन्च किया गया और लोगों आर्ट आदि खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। मोटी वेशन सॉन्ग राह देखते तुम्हारी मैदान है तुम्हारा ही आसमान है अब देना आपको इम्तिहान है, सॉन्ग पर छात्र छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति दी,वही प्रमुख सचिव सुभाष चन्द शर्मा ने कीट लॉन्च की। संकल्प वेलफेयर सोसाइटी की संस्थापक डॉ गीतांजलि शर्मा ने कहा कि 18 मंडलों के 400 दिव्यांग बालक बालिकाओ ने भाग लिया है, बालक बालिकाओं के अंदर छिपी प्रतिभाओं को निकाल कर उन्हें अंतरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्म मुहैया करना है, इस उद्देश्य के साथ यह तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया है, आज छात्र–छात्राओं द्वारा मसाला कार्यक्रम किट लॉन्च और लोगों आर्ट आदि खेलों में प्रतिभा किया गया है, इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में तीनों दिन अलग–अलग कार्यक्रम आयोजित होंगे, प्रमुख सचिव ने प्रेस वार्ता में कहा कि तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है, कल्चर, स्पोर्ट्स और प्रदर्शनी का आयोजन होगा, हम लोगों को एक अच्छा जीवन मिलना चाहिए, सभी लोगों को एक रहना चाहिए, ऐसे लोगों को पढ़ने का भी मौका मिलना चाहिए ऐसे लोगों को स्पोर्ट्स खेलना चाहिए, उत्तर प्रदेश सरकार की योजना है, कि जितने भी दिव्यांग बच्चे है उन्हें एक मंच प्रदान कर रही हैं, ऐसे संचालित संस्थान है उनसे मिलकर इस तरह का आयोजन करवाते हैं, मथुरा में तीन दिवसीय प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा है, सभी जनपदों से खिलाड़ी आ रहे हैं, 40 से 50 की संख्या में प्रदर्शनी लगाई जाएगी, मैं जानता हूं कि दिव्यांग साथियों के साथ काम करना उनकी भाषा को समझना कई बार आपस में भाषा को लेकर परेशानियां होती है, एक दूसरे को समझना संभव नहीं होता है, उन लोगों तक अपनी बात को कैसे पहुंचा जाए वह लोग क्या फील कर रहे हैं यह हमें समझना होता है, यह संस्थान सभी दिव्यांगों को पढ़ाई लिखाई करता है और समाज के साथ जोड़कर चलता है, सरकार भी दिव्यांगों को 1 हजार रुपए प्रति माह पेंशन देती है, इन लोगों को अंग प्रोवाइड कर रही है, इलेक्ट्रिक साइकिल और कृत्रिम उपकरण देना जिससे उनके जीवन में सहयोग हो सके, इस समय महाकुंभ का आयोजन हो रहा है, कुंभ में दिव्यांग साथियों के लिए सभी प्रकार की व्यवस्था की गई है, जिससे कि दिव्यांग साथियों को भी महाकुंभ में स्नान करने का सौभाग्य मिल सके, दिव्यांग बच्चों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, उन्हें एक अच्छा मंच मिलना चाहिए, जिससे कि वह अपने आप को साबित कर सके।आयोजन में अपनी भूमिका निभा रहे लोगों को प्रमुख सचिव ने लोगों किट वितरण की, जिसमें सत्येंद्र तोमर, डॉक्टर सुरेंद्र पाल सिंह, अर्पित भार्गव, सोनू ठाकुर, योगेश कुमार हिंडोलिया, धर्मवीर सिंह, अनुभव सिंह आदि लोगों को वितरित की,

केएम की मुहिम केएम परिवार आपके गांव आपके मोहल्ले में

मेरा संकल्प फ्री चिकित्सा फ्री शिक्षा: किशन चौधरी

मथुरा। केएम अस्पताल की मुहिम केएम आपके गांव आपके मोहल्ले के तहत मथुरा के अलग–अलग गांवों में जन संपर्कअधिकारी की पूर्व सूचना के आधार पर गांव के प्रधान बी डी सी और समाज सेवी की मदद से अस्पताल की चार टीमों ने कैंप लगाकर अधिक

सर्दी पड़ने के कारण गांव में बीमार पड़े बूढे बुजुर्ग जिनके लिए घर से निकलना मुश्किल होता है, उन मरीजों को केएम अस्पाल की डाक्टर्स की टीम ने देखा उन्हें उनकी बीमारी के बारे में समझाया और उनके इलाज के बारे समझाया।

केएम विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं जिला पंचायत अध्यक्ष किशन चौधरी का यह कहना है कि मैं इसे अपनी जिम्मेदारी मानता हूं कि मेरा ब्रजवासी जो गांव में रहता है, जिसे डाक्टर की सलाह मात्र लेने के लिए बड़े शहर में जाना पड़ता है। उन ब्रजवासियों के लिए केएम अस्पताल व नौ जवान रेजिडेंट डाक्टर्स की टीम वरिष्ठ चिकित्सकों की देखरेख में मेरे उन ब्रजवासियों के गांव में जाकर कैंप लगाया उनके मोहल्ले में जाकर उन्हें चिकित्सकीय सलाह उपलब्ध करा रहे है। यह मुहिम मथुरा जिले के हर गांव में अपनी सेवाएं देगी। जिला पंचायत अध्यक्ष किशन चौधरी ने कहा कि हमारी केएम अस्पताल की मेडीकल टीम आपके गांव आपके द्वार अभियान के तहत इसी तरह गांव गांव गली गली जाकर लोगों को जागरूक एवं बीमार लोगों को ढूंढ कर इलाज करेंगी।

और वहीं ग्रामीणों का कहना है कि हमारे लिए तो केवल गांव में बैठा झोलाछाप ही सहारा होता है, अभी तक कोई भी डाक्टर या डाक्टरों की टीम कभी भी हमें हमारे घर में देखने नहीं आई हमें ही शहर में जाना पड़ता है, और दिखाने भर के पैसे देने पड़ते थे, पर केएम हॉस्पिटल ने हमारे गांव को ही एक दिन के लिए अस्पताल जैसा बना दिया जिसमें बड़े बड़े डाक्टर सलाह दे रहे है जिसका हमें पैसानहीं देना पड़ रहा है। मोहन सिंह ने बताया पहले हम इलाज के लिए बाहर जाते थे, लेकिन अब हम घर के पास ही फ्री इलाज और जांच की सुविधा पा रहे हैं। यह पहल हम जैसे गरीब लोगों के लिए बहुत मददगार साबित हो रही है।"

जागरूकता अभियान में प्रमुख रूप से केएम विवि के वाइस चांसलर डा. एनसी प्रजापति, एडीशनल मेडीकल सुप्रीडेंट डा. आरपी गुप्ता, मेडीकल प्राचार्य डा. पीएन भिसे सहित अन्य चिकित्सकों का कहना है कि इस मुहिम से लोगों को न केवल इलाज मिलेगा, बल्कि उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी किया जाएगा। सभी बृजवासियों से अनुरोध है कि वे इस सुविधा का लाभ उठाएं और किसी प्रकार की असहजता महसूस न करें। केएम अस्पताल की टीम ने मथुरा शहर के सुखदेव, नवनीत नगर, फरह के फैंचरी गांव, गोवर्धन के जतीपुरा, धाना खेमा में बीमारों को जागरूक किया, उचित इलाज की सलाह दी।

उपज की कार्यकारिणी बैठक संपन्न

सामलिया एग्रो रिसॉर्ट,वृंदावन में बनेगा प्रेस क्लब : ठाकुर यशवीर राघव

मथुरा। उत्तर प्रदेश एसोसिएशन ऑफ जर्नलिस्ट (उपज)की कार्यकारिणी बैठक

बुधवार को जी एल ए यूनिवर्सिटी के पीछे सामलिया एग्रो रिसॉर्ट वृंदावन में आयोजित की गई जिसमें ठाकुर यशवीर सिंह राघव ने सभी पत्रकारों को पटुका और महाराणा प्रताप का छायाचित्र देकर सम्मानित किया । बैठक में पत्रकारों की समस्या – समाधान,संगठन के विस्तार और पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं पर मंथन किया गया। बैठक में सर्व सहमति से उपज पत्रकार संगठन मथुरा के जिला अध्यक्ष अतुल कुमार जिंदल एवं जिला महासचिव ठाकुर विष्णु पहलवान ने सामलिया ग्रुप के चेयर मेन ठाकुर यशवीर सिंह राघव को वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष का मनोनयन प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। नवनियुक्त उपज पत्रकार संगठन मथुरा के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष ठाकुर यशवीर सिंह राघव ने उपज पत्रकार संगठन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वह पूरी ईमानदारी के साथ जाति धर्म का भेदवाव न करते हुए राष्ट्रहित हित में पत्रकारिता और उपज पत्रकार संगठन में पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ पद का निर्वहन करेंगे। ठाकुर यशवीर राघव ने मथुरा की प्रेस क्लब की समस्या पर कहा कि मथुरा शहर में अगर कोई जगह प्रेस क्लब के लिए चिन्हित होती है तो वह आर्थिक सहयोग के लिए तैयार हैं इसके साथ ही सामलिया एग्रो रिसॉर्ट पर वृंदावन में प्रेस क्लब बनाएंगे। बैठक में करीब 50 पत्रकारों ने भाग लिया और अपने अपने विचार व्यक्त किए।

बैठक में निर्भीक और निष्पक्ष रूप से समाज हित में पत्रकारिता करने के लिए प्रेरित किया गया।

उपज पत्रकार संगठन मथुरा के जिला महासचिव ठाकुर विष्णु पहलवान ने कार्यकम का संचालन किया।

इस दौरान जिला कोषाध्यक्ष विपिन अग्रवाल,जिला संगठन मंत्री राजकुमार गुप्ता, वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष विजय सिंघल, जिला उपाध्यक्ष चेतन राघव, जिला उपाध्यक्ष, बी एस छौंकर, मुकेश कुमार गुप्ता राजू भाई साहूकार शर्मा महानगर अध्यक्ष मोइनुद्दीन,महावन तहसील अध्यक्ष सुनील राज प्रदीप कुमार आबिद अली सहित आदि पदाधिकारी और सदस्य मौजूद रहे।

महाकुंभ सामाजिक समरसता का संदेश देता है-मनोज जी'

प्रतापगढ़ सजिले के गनई डीह ग्राम में सामाजिक समरसता के पावन पर्व मकरसंक्रान्ति के अवसर पर मकर संक्रान्ति उत्सव और समरसता भोज का भव्य आयोजन उच्चतम न्यायलय के अधिवक्ता एवं पूर्व उपाध्यक्ष नई दिल्ली बार एसोसिएशन आलोक पाण्डेय द्वारा किया गया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ , पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के सह क्षेत्र सम्पर्क प्रमुख मनोज जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर्नल जयराम सिंह और संचालन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग व्यवस्था प्रमुख गिरिजा शंकर मिश्र ने किया । इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सह क्षेत्र सम्पर्क प्रमुख मनोज जी ने कहा कि मकर संक्रान्ति का पर्व समरसता का संदेश देता है । भगवान सूर्य का यह पर्व पूरे जगत को प्रकाशमान करता है । यह बड़े से बड़े कई रूपों में रहने वाले गुड़ और अन्नों में अत्यन्त छोटे तिल के साथ जुड़ जाने का पर्व है जो सभी को समरस करने का संदेश देता है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है द्यवर्तमान मे प्रयागराज का महाकुंभ सामाजिक समरसता का जीवन्त उदाहरण है द्यआरंभ में आयोजक आलोक कुमार पांडेय ने सभी अतिथियों को अंगवस्त्रम और माँ बाराही का चित्र देकर स्वागत किया और सभी से सामाजिक समरसता को मजबूत करने का आग्रह किया । इस अवसर पर जिला संघचालक चिंतामणि द्विवेदी, संपर्क प्रमुख डॉ रंगनाथ शुक्ल, कृष्ण कुमार सिंह रिंकू शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, शिव शंकर सिंह, अवधेश मिश्र, डॉ दिनेश मौर्य, ब्रजेन्द्र प्रताप सिंह छोटे भइया, अनिल सिंह, कुलदीप सिंह, सोनू सिंह ,संतोष कुमार पांडे, रिंकू सिंह, सुनील तिवारी, अशोक सरोज, अजय राजू, रामनाथ, आनंद प्रकाश ,विपुल सिंह, केपी सिंह, बबलू सिंह प्रधान, श्यामू दिलीप पांडे, अवनीश पांडे ,मोनू पांडे, अशोक सिंह, पिंटू सिंह, शिवमणि आदि उपस्थित रहेद्य

'उत्तर प्रदेश में प्रभा शंकर ओझा , महाराष्ट्र में संजय मिश्रा, दिल्ली में संदीप तिवारी और छत्तीसगढ़ में महेश कुमार प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए'

भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की इकाइयों के विस्तार से कलमकारों में अभूतपूर्व उत्साह राष्ट्रीय महाधिवेशन की तिथि और तैयारियों के लिए विशेष बैठक रविवार को

प्रयागराज । देश भर में कलमकारों और पत्रकारों के सम्मान सुरक्षा व शक्ति के लिए कृतसंकल्पित संगठन भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की इकाइयों के निरंतर विस्तार से कलमकारों में अभूतपूर्व उत्साह एवं आत्मविश्वास बढ़ रहा है तथा अनेक पुराने सदस्य भी संगठन के साथ पुनः जुड़ने को तत्परता दिखा रहे हैं । राष्ट्रीय संचालन समिति की सहमति से अध्यक्ष मुनेश्वर मिश्र और मुख्य महासचिव मथुरा प्रसाद धुरिया ने उत्तर प्रदेश में प्रभा शंकर ओझा तथा छत्तीसगढ़ में महेश कुमार के प्रति पुनः विश्वास व्यक्त किया है और महाराष्ट्र में संजय मिश्र व दिल्ली में संदीप कुमार तिवारी को प्रदेश अध्यक्ष घोषित किया गया है ।

राष्ट्रीय संयोजक डा० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने बताया कि मध्य प्रदेश और बिहार के बाद अब उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र छत्तीसगढ़ व दिल्ली में प्रांतीय अध्यक्षों की घोषणा की गई है द्य अति शीघ्र ही झारखंड, हरियाणा, पंजाब और असम में भी इकाइयों के गठन पर निर्णय ले लिया जाएगा द्य दक्षिण भारत के अनेक राज्यों में संगठन विस्तार की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है द्य कुम्भ मेले में होने वाले राष्ट्रीय महाधिवेशन की तिथि तथा तैयारियों के लिए रविवार को एक विशेष बैठक आहूत की गई है जिसमें व्यापक विस्तार के लिए भी विचार किया जाएगा ।

खुलासा: गैंग मथुरा में बना रहा था बोर्ड, विश्वविद्यालयों की 'फर्जी डिग्री'

–वसूली जाती थी मोटी रकम, फर्जी शैक्षिक प्रमाणपत्र बनाने वाले गिरोह का पर्दाफाश

मथुरा। फर्जीवाड़े का जिन्न एक बार फिर बोतल निकल आया है। थाना कोतवाली पुलिस ने विभिन्न राज्यों के शैक्षणिक बोर्ड की फर्जी मार्कशीट, टीसी अन्य शैक्षिक प्रमाण पत्र बनाने वाले गिरोह के सरगरा सहित पांच जालसाजों को फर्जी मार्कशीट, टीसी अन्य शैक्षिक प्रमाण पत्र एवं प्रयुक्त इलैक्ट्रानिक उपकरण सहित गिरफ्तार किया है। विभिन्न राज्यों के शैक्षणिक बोर्ड की फर्जी मार्केशीट, टीसी अन्य शैक्षिक प्रमाण पत्र बनाने वाले गिरोह के पांच अभियुक्तों मनीष प्रताप सिंह उर्फ मांगेराम पुत्र रामकिशन निवासी पुराना किला थाना हुसैनगंज जिला लखनऊ, मुकेश पुत्र देवी सिंह निवासी ग्राम चुरमुरा थाना फरह, सुरेश चन्द्र पुत्र बिजेन्द्र सिंह निवासी बसई थाना शेरगढ़, ऋषि पुत्र हरिओम निवासी ग्राम दलौता थाना शेरगढ़, रामप्रकाश गौतम पुत्र सत्यप्रकाश गौतम निवासी पुष्प बिहार कालोनी थाना गोविन्दनगर जिला मथुरा को बजरंग धर्मकांटा के पास बने मकान से समय करीब 21.30 बजे गिरफ्तार किया गया। मौके से एक अन्य साथी विक्रम सिंह पुत्र नवल सिंह निवासी बसई थाना शेरगढ़ जिला मथुरा भागने में सफल रहा। गिरफ्तारशुदा अभियुक्तगणों से शैक्षिक प्रमाण पत्र बनाने में प्रयुक्त उपकरण व कई फर्जी मार्कशीट व अन्य शैक्षिक प्रमाण पत्र बरामद हुये। अभियुक्तों के विरूद्ध बरामदगी के आधार पर धारा 61(2), 318(4), 336(3), 338, 340(2) बीएनएस के तहत पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही की गयी है।

गैंग ऐसे कर रहा था काम

युवाओं की तलाश कर संपर्क स्थापित करके सम्बन्धित विश्वविद्यालयों, शिक्षा बोर्डों से अलग अलग रेट तय कर वार्षिक दर से फर्जी शिक्षा प्रमाण पत्र, अंकतालिका, टीसी तैयार करते थे। तफर्जी तरीके से उनको शैक्षिक अंकपत्र, टीसी अन्य शैक्षिक प्रमाण पत्र प्रदान कर मोटी रकम वसूलने का कार्य करते थे।

सम्पादकीय.....

बाड़बंदी पर विवाद

गत वर्ष अगस्त में तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना के अपदस्थ होने के बाद बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार के दौरान भारत विरोधी रवैये में कमी नहीं आ रही है। लगातार भारत विरोधी मुहिम व अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हमले के बाद अब नया विवाद दोनों देशों की सीमा पर बाड़ लगाने को लेकर पैदा किया जा रहा है। जबकि इस मुद्दे पर दोनों देशों के बीच पहले ही सहमति बन चुकी थी। बड़े हिस्से पर पहले ही बाड़बंदी हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार बैठे बांग्लादेश के हुकमरान विवाद के नये–नये मुद्दे तलाश रहे हैं। बीते रविवार बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने ढाका में भारत के उच्चायुक्त प्रणय वर्मा को तलब किया। कयास लगाये जा रहे हैं कि बांग्लादेश ये हरकतें किसी तीसरे देश के इशारे पर कर रहा है। उल्लेखनीय है कि भारत–बांग्लादेश के बीच 4156 किलोमीटर लंबी सीमा में से 3271 किलोमीटर पर कंटीले तार की बाड़ लग चुकी है और अब 885 किलोमीटर सीमा पर बाड़ लगना शेष है। अवैध घुसपैठियों, अपराधियों और चरमपंथियों की रोकथाम हेतु सीमा पर बाड़ लगाना भारत का अधिकार है। मामले का निस्तारण बांग्लादेश को समझदारी से करना चाहिए। दरअसल, बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार पुराने मुद्दे उछाल कर विवाद को हवा दे रही है। ऐसे वक्त में जब पाक से उसकी नजदीकियां लगातार बढ़ी हैं और वहां पाक सेना के अधिकारियों की सक्रियता देखी गई है, भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिये कदम उठाने ही चाहिए। अब तक पंजाब, जम्मू–कश्मीर व नेपाल के रास्ते आतंकवादियों को भारत भेजने की कोशिश पाक करता रहा है। इस आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता कि वह बांग्लादेश से लगी भारत की खुली सीमा का दुरुपयोग न करे। निश्चित रूप से पिछले दिनों बांग्लादेश से रिश्तों में जिस तरह से अविश्वास उपजा है, उसके चलते भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकता। यहां उल्लेखनीय है कि बाड़बंदी के भारत के फैसले को व्यापकता में देखने की जरूरत है। यह बात भी ध्यान रखने काबिल है कि दोनों देशों में सीमा पर बाड़ लगाने को लेकर विगत में एक राय बनी हुई है। बीएसएफ और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश यानी बीजीबी में कई बार बातचीत के बाद इस मुद्दे पर सहमति बन चुकी है। लेकिन बांग्लादेश भारत की सदाशयता के बावजूद टकराव के मूड में नजर आता है। ऐसा ही रवैया उसका अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर भी रहा है, जिस बारे में वह अब दलील दे रहा है कि हालिया हिंसक घटनाएं सांप्रदायिक नहीं बल्कि राजनीतिक कारणों से हुई हैं। बल्कि अंतरिम सरकार के प्रमुख भारतीय मीडिया पर घटनाओं को बढ़ा–चढ़ाकर बताने का आरोप लगाते हैं। ऐसे वक्त में जब बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार ने पाकिस्तानियों का बांग्लादेश में प्रवेश आसान कर दिया है तो पाक के बांग्लादेश को भारत विरोधी प्लेटफॉर्म के रूप में इस्तेमाल करने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। यह हकीकत है कि पाक का जन्म ही भारत विरोधी मानसिकता से हुआ है। ऐसे में अतीत से सबक लेते हुए भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर किसी तरह की चूक नहीं करनी चाहिए। किसी भी तरह की ढिलाई भारतीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकती है। भारत की उदारता को बांग्लादेश हमारी कमजोरी न मान ले, इसलिए उसे बताना जरूरी है कि भारत से टकराव की कीमत उसे भविष्य में चुकानी पड़ सकती है। यह भी कि संबंधों में यह कसैलापन लंबे समय तक नहीं चल सकता। उसकी यह कटुता उसके लिये ही कालांतर घातक साबित हो सकती है। यह विडंबना ही है कि नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस से क्षेत्र में शांति व सद्भाव की जो उम्मीदें थी, उसमें उन्होंने कट्टरपंथियों की लाइन लेकर निराश ही किया है। उनकी सरकार लगातार अड़ियल व बदमिजाजी का रुख अपनाए हुए है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका हो। जिस बांग्लादेश को पाकिस्तानी क्रूरता से मुक्त कराकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत ने तमाम कुर्बानियों के बाद जन्म दिया, उसका यह रवैया दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा।

कांग्रेस-आप की जंग में इंडिया को नुकसान

प्रेम शर्मा

देश का शायद ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण राज्य होगा जहां से उसने पिछले दस वर्षों में अपने उम्मीदवार खड़े न किये हों। यह तो सही है कि इसके चलते उसने दिल्ली के बाहर पंजाब में अपनी सरकार बनाई है तथा उसे इसका श्रेय जाता है कि कांग्रेस व भाजपा के अतिरिक्त वही ऐसा दल है जिसकी दो राज्यों में सरकारें हैं।

ऐसे समय में जब प्रमुख विपक्षी गठबन्धन 'इंडिया' को मजबूत करने के लिये उसका नेतृत्व कर रहे कांग्रेस पर दबाव है, दिल्ली विधानसभा चुनाव में उसके और सत्तारुढ़ आम आदमी पार्टी के बीच जंग इतनी तेज हो गयी है कि शक है कि गठबन्धन में आप रहेगी या नहीं। चुनाव प्रचार के दौरान एक–दूसरे को नीचा दिखाने पर आमादा कांग्रेस व आप के बीच जो घट रहा है, उससे गठबन्धन की एकजुटता और भविष्य पर भी सवालिया निशान लग रहे हैं। सम्भव है कि इसके बाद आप इंडिया से कांग्रेस को निकालने या उसके हाथों से नेतृत्व छीनने की मुहिम छेड़ दे या स्वयं अलग हो जाये। आप के ताल्लुकात कांग्रेस से हाल के दिनों में काफी बिगड़े हैं। देखना होगा कि यह अदावत क्या गुल खिलाती है। आप का व्यवहार वैसे भी इस मायने में संदिग्ध रहा है कि उसके सभी सियासी कदमों का लाभ केन्द्र की सत्ता में बैठी भारतीय जनता पार्टी को मिलता रहा है। विस्तार की महत्वाकांक्षा के चलते पूर्व मुख्यमंत्री एवं पार्टी अध्यक्ष अरविंद केजरीवाल ने अनेक राज्यों के विधानसभा चुनावों में उम्मीदवार उतारने का सिलसिला बनाये रखा था। जहां तक इंडिया गठबन्धन का हिस्सा बनने के पहले की बात थी, तब तक तो ठीक था क्योंकि यह हर पार्टी का अधिकार है कि वह चाहे जहां से अपने प्रत्याशी उतारे व कहीं से चुनाव लड़े। देश का शायद ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण राज्य होगा जहां से उसने पिछले दस वर्षों में अपने उम्मीदवार खड़े न किये हों। यह तो सही है कि इसके चलते उसने दिल्ली के बाहर पंजाब में अपनी सरकार बनाई है तथा उसे इसका श्रेय जाता है कि कांग्रेस व भाजपा के अतिरिक्त वही ऐसा दल है जिसकी दो राज्यों में सरकारें हैं। जहां तक इंडिया गठबन्धन में शामिल होने के बाद की बात है, दिल्ली विधानसभा चुनाव का ऐलान होते ही उसने तत्काल अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी– सहयोगी दलों से बात किये या तालमेल की गुंजाइशों पर विचार किये बगैर ही। इंडिया गठबन्धन का सबसे बड़ा अंतर्विरोध यह है कि अनेक राज्यों में कांग्रेस जिन दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ती है, विधानसभा चुनावों में उनके सामने होती है। इस बाबत तर्क दिया जाता है कि गठबन्धन लोकसभा के लिये है, विधानसभाओं के लिये नहीं। कई मुद्दों को लेकर सहयोगी दल राज्यों में आमने–सामने होते हैं। ऐसी स्थिति में जब वे लोकसभा का चुनाव मिलकर लड़ते हैं तो लोगों को शक होना स्वाभाविक है। इससे कांग्रेस व जिन दलों के साथ उनका राज्यों में मुकाबला होता है, दोनों के पक्के वोटरों को छोड़कर स्वतंत्र मत अक्सर भाजपा की ओर चले जाते हैं। राहुल गांधी की दो भारत जोड़ो यात्राओं के दौरान कई दलों को साथ देखा गया परन्तु चुनाव में वे अलग–अलग थे या जो दल इन यात्राओं के पहले हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के खिलाफ थे, वे इसमें शामिल हुए और अंततरू इंडिया के गठबन्धन का हिस्सा बने। पश्चिम बंगाल में कांग्रेस का सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस पार्टी के साथ गठबन्धन नहीं हो सका क्योंकि ममता बनर्जी तैयार नहीं हुईं। ऐसे ही, इंडिया में शामिल पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी ने राज्य में मिलकर नहीं वरन अलग चुनाव लड़ा। उसने ऐसा यहां नेशनल कांफ्रेंस के साथ स्थानीय मुद्दों पर अपने मतभेदों एवं मुकाबले के कारण किया जबकि एनसी भी इंडिया में शरीक है। आप ने पंजाब में कांग्रेस को हराकर सत्ता पाई है, जबकि उसके बाद आप इंडिया में शामिल हो गयी। यह भी पाया गया कि अनेक स्थानों पर आप के चुनाव लड़ने से अंततरू भाजपा को ही फायदा हुआ जिसके कारण उसे भाजपा की बी टीमश तक कहा जाता है। हालांकि कई राज्यों में कांग्रेस व सहयोगियों के सम्बन्धा मजबूत बने हुए हैं। तमिलनाडु (द्रविड मुनेत्र कषगम), महाराष्ट्र (उद्धव ठाकरे की शिवसेना व शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी), झारखंड (झारखंड मुक्ति मोर्चा), बिहार (राष्ट्रीय जनता दल) और कमोबेश उत्तर प्रदेश (समाजवादी पार्टी) के बारे में ऐसा कहा जा सकता है। इसमें भी कई स्थानों पर कोई न कोई घालमेल देखने को मिल ही जायेगा। अब दिल्ली के चुनाव में समाजवादी पार्टी ने आप को समर्थन देकर खुद को कांग्रेस के खिलाफ खड़ा कर दिया है। यह विभाजन दिल्ली विधानसभा के चुनाव में बढ़ता नजर आ रहा है। पहले ही कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पार्टी के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन ने कुछ अरसा पहले केजरीवाल को राष्ट्रद्रोही कहकर आग सुलगा दी थी, जो सोमवार की रात को सीलमपुर में हुई प्रचार रैली में दावानल बनती दिख रही है। राहुल गांधी ने यह कहकर भाजपा व आप को एक ही तराजू पर बिठा दिया कि सामाजिक न्याय न प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दिला सकते हैं और न ही केजरीवाल। इसके पहले नयी दिल्ली के प्रत्याशी, पूर्व सांसद तथा दिल्ली की पूर्व सीएम दिवंगत शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित ने यह कहकर केजरीवाल पर निशाना साधा कि यदि जनता को दिल्ली का मुख्यमंत्री मुस्कुराने वाला चाहिये तो वे कांग्रेस को वोट करें और रोता हुआ चाहिये तो आप के पास जायें! इसी सीट पर केजरीवाल हैं और भाजपा के प्रवेश वर्मा। संदीप दीक्षित ने एक समाचार एजेंसी को दिये साक्षात्कार में कहा कि शपूरी दिल्ली जान गयी है कि केजरीवाल सबसे बड़ा भ्रष्टाचारी है। उन्होंने केजरीवाल के शराब घोटाले में जेल जाने तथा उनके 32 करोड़ रुपये के कथित शीशमहल का जिक्र किया। एक्स पर एक पोस्ट डालकर भी केजरीवाल को खूब खरी–खोटी सुनाई है। उन्होंने केजरीवाल के देश बचाने के दावे पर तंज कसते हुए कहा कि जब शीलाजी के बारे में 1000 झूठ फैला रहे थे, सोनिया गांधी को गिरफ्तार करने की धमकी दे रहे थे, अन्ना हजारे के साथ लोकपाल के नाम पर लोगों को बेवकूफ बना रहे थे तब क्या वे (केजरीवाल) देश बचा रहे थे? साफ है कि यह दरार बढ़ेगी जिसका असर गठबन्धन पर पड़ सकता है।

अब क्या चुनाव ही खतरे में है?

राजेंद्र शर्मा

हैरानी की बात नहीं है कि दिल्ली चुनाव के सिलसिले में कम से कम एक बात पर सभी सहमत होंगे। वह यह कि भाजपा, इस चुनाव को जीतने के लिए सचमुच कोई कसर नहीं छोड़ने वाली है। मोदी–शाह की भाजपा के संबंध में यह कथन एक तरह से रूढ़ हो चुका है। अक्सर इससे अर्थ यह लगाया जाता है कि वर्तमान सत्ताधारी पार्टी हरेक चुनाव, छोटे से छोटा चुनाव भी, अपनी पूरी ताकत झोंक कर लड़ती है। इसे मोदी–शाह की भाजपा की एक महत्वपूर्ण विशेषता ही माना जाने लगा है, जो उसे अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों पर जबर्दस्त बढ़त दिला देती है। इस सिलसिले में, जाहिर है कि उसके घनघोर साधनों तथा मुख्यधारा के मीडिया पर लगभग पूर्ण नियंत्रण की मदद से, इस कोई कसर नहीं छोड़ने के हिस्से के तौर पर कई ऐसी चीजों को सामान्य बनाकर स्वीकार्य बना दिया जाता है, जिन पर मोदी–पूर्व भारत में किसी न किसी हद तक सवाल जरूर उठते थे। इनमें एक है चुनाव में संसाधनों का इस तरह झोंका जाना, जिसके सामने चुनाव कानून के अंतर्गत देश में लगी चुनाव खर्च की सीमाएं और उससे संबंधित चुनाव आयोग की सारी कसरतें, एक मजाक ही नजर आने लगी हैं बल्कि मजाक कहलाने भी लगी हैं। चुनावी बांड की व्यवस्था ने, जिसे अब सुप्रीम कोर्ट ने अवैध करार देकर बंद करा दिया है, चुनावी चंदे के प्रवाह को पूरी तरह से इकतरफा सत्ताधारी पार्टी के पक्ष में मोड़ने के जरिए, इस मजाक को और बहुत ऊपर उठा दिया। अब शायद ही कोई इसकी याद दिलाने की जेहमत उठाता होगा कि खर्च की इन सीमाओं का मकसद, चुनाव में धनबल के खेल पर अंकुश लगाना तो था ही, चुनाव के लिए मुख्य प्रतिद्वंद्वियों के लिए एक हद तक बराबरी का मैदान मुहैया कराना भी था। एक और चीज जिसे नये–नये चाणक्यों को अधिष्ठित करने के जरिए सामान्य और इस तरह स्वीकार्य बना दिया गया है, चुनाव का राजनीति और विचारधारा से ऊपर उठा दिया जाना है, जहां जीत के लिए कोई भी पैंतरा, कोई भी तिकड़म जायज है। चुनाव से ऐन पहले दल–बदल से लेकर, निहायत नंगई से जातिवादी गोटियां बैठाए जाने तक, सभी कुछ इसमें आ जाता है। कहने की जरूरत नहीं होनी चाहिए, हालांकि इसकी याद दिलाने की आज बहुत जरूरत है कि इस सब को सामान्य बनाए जाने, जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में हमारे चुनाव के जनतांत्रिक सार को, पहले ही काफी खोखला कर दिया था। बहरहाल, मोदी–शाह की भाजपा इतने पर भी नहीं रुकी है। चुनाव आयोग को अपनी मुट्ठी में करने के बाद, पिछले अनेक वर्षों में उसने चुनावी नियम–कायदों के हिसाब से जो कुछ अवैध था, उसका भी सहारा लेने का सामान्य बनाना शुरू कर दिया। बेशक, इसकी शुरूआत अपेक्षाकृत छोटी चीजों से हुई। जैसे चरणवार चुनाव में चुनाव प्रचार की खामोशी के दिनों में, संबंधित क्षेत्र के ऐन बगल के क्षेत्र में जाकर, प्रचार करना और उसका मीडिया के जरिए, खामोशी के इलाकों समेत हर जगह प्रचार कराना। मतदान करने के लिए जाने को रैली में बदल देना। मतदान केंद्र के निषेध के दायरे में चुनाव चिन्ह का प्रदर्शन करना आदि, आदि। यह सब धीरे–धीरे चुनावी विधि–निषेधों में बढ़ती सुरंग बनाए जाने का मामला था। बहरहाल, इस तरह चुनावी पाबंदियों को भीतर से पर्याप्त रूप से खोखला करने के बाद, 2017 के उत्तर प्रदेश के चुनाव से कब्रिस्तान–श्मशान, दीवाली–रमजान करने के सांप्रदायिक इशारों के जरिए, चुनाव में धार्मिक अपील तथा साप्रंदायिकता का सहारा लेने पर लगी कानूनी रोक को लांघने की ओर तेजी से कदम बढ़ाए गए। इसके साथ ही सर्जिकल स्ट्राइक के चुनावी इस्तेमाल के जरिए, चुनावी कानूनों के उल्लंघन का एक और मोर्चा ही खोल दिया गया। इसके बाद, 2019 के आम चुनाव में तो, चुनाव प्रचार में सेना तथा उसकी कार्रवाइयों के इस्तेमाल पर लगी पाबंदियों की सरासर धज्जियां ही उड़ायी गयीं। कागजों में लिखी तमाम पाबंदियों के बावजूद, 2019 का पूरा का पूरा चुनाव, पुलवामा–बालाकोट की पिच पर ही लड़ा गया और जोरदार तरीके से जीता भी गया। इस दौरान, शीर्ष स्तर पर चुनाव आयोग को पूरी तरह से सत्ता पक्ष के साथ किया जा चुका था और अशोक लवासा रूप में आयोग में असहमति की इकलौती आवाज को बाहर किया जा चुका था। इसी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए, 2024 के आम चुनाव में सत्ताधारी पार्टी ने विपक्ष के खिलाफ सांप्रदायिक दुहाई को अपना मुख्य हथियार बना लिया। और यह सिलसिला, पिछले ही महीने हुए महाराष्ट्र तथा झारखंड के चुनाव तक भी जारी था। इसके लिए मैदान तैयार किया गया था, चुनाव से ऐन पहले, चुनाव आयोग में दो सत्तापक्ष के लिए मनमाफिक सदस्यों की भर्ती के जरिए। इसी तरह की भर्ती सुनिश्चित करने के लिए, सत्ताधारी पार्टी ने संसद में अपने बहुमत का इस्तेमाल कर, चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के संबंध में एक नया कानून सिर्फ इसलिए बनाया था, ताकि चुनाव आयोग की नियुक्तियों में निष्पक्षता लाने के पक्ष में चुनाव आयोग के हस्तक्षेप के बाद, तीन सदस्यीय नियुक्ति समिति में प्रधानमंत्री के साथ, विपक्ष के नेता तथा सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को रखे जाने की जो व्यवस्था बनी थी, उसे फिर से सरकार के पक्ष में झुकाया जा सके। इस कमेटी में मुख्य न्यायाधीश को हटाकर, प्रधानमंत्री के अलावा, उनके द्वारा नामजद उनके ही एक मंत्री को शामिल कर लिया गया था। हैरानी की बात नहीं है कि उसके बाद से चुनाव आयोग ने खुद प्रधानमंत्री के स्तर तक से खुल्लमखुल्ला धर्म की दुहाइयों तथा सांप्रदायिक अपीलों का सहारा लिए जाने पर चूं तक नहीं की। जाहिर है कि इस सब ने जनता की जानकारीपूर्ण इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में चुनाव के रहे–सहे सार को भी नष्ट कर दिया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि इस मुकाम पर पहुंचकर चुनाव, जनतंत्र का खोल भर रह जाता है, जो भीतर से खोखला है। लेकिन, चुनाव जीतने के लिए कुछ भी करने की मोदी–शाह की भाजपा की तत्परता, जैसे अब जनतंत्र के इस खोल को भी नष्ट करने की ओर बढ़ रही है। चुनाव में धांधली की आम शिकायतों और ईवीएम के जरिए गड़बड़ी की आम शिकायतों को, उनमें काफी वजन होने के बावजूद, बहस के लिए यहां हम अगर छोड़ भी दें तो भी, चुनाव मात्र पर दुतरफा हमले की शिकायतों से उठे गंभीर सवालों को, जनतंत्र की परवाह करने वाला कोई भी व्यक्ति अनदेखा नहीं कर सकता है।इस हमले का एक बढ़ता हुआ पहलू, जो खासतौर पर उत्तर प्रदेश में आम चुनाव में और अभी पिछले महीने हुए उपचुनाव में और भी खुलेआम सामने आया था, छांटकर तबके विशेष, मुस्लिम अल्पसंख्यकों को वोट ही देने से रोकने का था। उत्तर प्रदेश में इसके विशेष रूप से सामने आने की वजह यही थी कि इसके लिए पुलिस–प्रशासन की गैर–कानूनी काम करने की जिस तरह की तत्परता की जरूरत होती है, वह लंबे समय से तथा बिल्कुल तानाशाहीपूर्ण तरीके से, सत्ताधारी भाजपा द्वारा प्रशासित राज्यों में ही संभव है। चुनाव को ही गैर–चुनाव बनाने वाले इसी हमले का दूसरा पहलू, पुनरू शासन पर नियंत्रण का ही इस्तेमाल कर, टार्गेटेड तरीके से संभावित रूप से विरोधी वोटों को, जाहिर है कि सबसे बढ़कर अल्पसंख्यकों के वोटों को काटना और बाहर से अपने समर्थकों के नाम मतदाता सूचियों में जुड़वाना है। यह चुनाव के नतीजों को अपने पक्ष में बदलने के लिए, चुनाव करने वाली जनता का ही बदला जाना है। विपक्षी पार्टियों और खासतौर पर उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी द्वारा मतदाता सूचियों में टार्गेटेड हेराफेरी की आम तौर पर शिकायतें किए जाने के अलावा अब कम से कम तीन लोकसभा क्षेत्रों में, जहां बहुत कम अंतर से हार–जीत का फैसला हुआ था, ऐसी टार्गेटेड मतदाता सूची धांधली के साक्ष्य मीडिया रिपोर्टों में सामने आ चुके हैं। इनमें मेरठ और फर्रुखाबाद और पुरानी दिल्ली की सीटें शामिल हैं। बहरहाल, अब दिल्ली के चुनाव तक आते–आते, इस खेल को देश की सत्ताधारी पार्टी ने बहुत ऊंचे स्तर पर पहुंचा दिया लगता है।

कनाडा और ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने की बात महज इच्छा नहीं

नन्तू बनर्जी

ऐसा लगता है कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की कनाडा और ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने और मैक्सिको खाड़ी का नाम बदलने की बात महज उनकी सामान्य इच्छा नहीं है बल्कि इसके पीछे कोई राज की बात है। कनाडा पर अमेरिका का कब्जा तो ब्रिटिश सम्राट की भागीदारी वाली दोनों देशों के बीच एक संधि या कनाडा के नागरिकों द्वारा अमेरिका में शामिल होने के पक्ष में जनमत संग्रह या बल प्रयोग के माध्यम से ही संभव है। कनाडा की अर्थव्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका पर अत्यधिक निर्भर है। औपनिवेशिक युग के बाद भी देशों पर जबरन कब्जा करना कोई नई बात नहीं है। अमेरिका, 1867 के ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम के तहत इसके निर्माण के बाद से ही कनाडा के विशाल क्षेत्र को हड़पने में रुचि रखता है। कनाडा एक द्विधार्मिक देश है। कानूनी अवधारणाएं अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों में व्यक्त की जाती हैं। ब्रिटिश सम्राट, किंग चार्ल्स – तृतीय, कनाडा के संवैधानिक प्रमुख हैं। यद्यपि वह देश पर शासन नहीं करते हैं, ब्रिटिश राजा कनाडा की सरकार और पहचान का एक मूलभूत हिस्सा हैं। हालांकि, अमेरिका ने अभी तक 9.98 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक के भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से दुनिया के दूसरे सबसे बड़े देश कनाडा पर कब्जा करने का गंभीर प्रयास नहीं किया है। कनाडा पर अमेरिका का कब्जा इसे रूस से आगे दुनिया का सबसे बड़ा देश बना देगा, जिसका कुल क्षेत्रफल 17,098,242 वर्ग किलोमीटर है। अमेरिका का क्षेत्रीय विस्तार कोई नई बात नहीं है। यह अमेरिकी संविधान द्वारा प्रदान किया गया है। ट्रम्प इसे जानते हैं। ट्रम्प के सुझाव पर अमेरिका में कोई गंभीर राजनीतिक बहस नहीं है कि कनाडा को अपने में मिला लिया जाये और डेनमार्क के साथ संधि के माध्यम से ग्रीनलैंड को हासिल कर लिया जाये। निरंतर क्षेत्रीय विस्तार और अधिग्रहण अमेरिका के भू–राजनीतिक इतिहास का एक हिस्सा है। विश्व इतिहासकार जानते हैं कि अमेरिका ने कैलिफोर्निया, नेवादा, यूटा, न्यू मैक्सिको, एरिजोना, कोलोराडो, ओक्लाहोमा, कंसास और व्योमिंग के वर्तमान राज्यों को कैसे अपने में मिला लिया। कनाडा और ग्रीनलैंड अगले निशाने हो सकते हैं। ऐसा करने के लिए अमेरिका में एक संवैधानिक वास्तुकला मौजूद है। अमेरिका के लिए अधिग्रहण या अधीनता के माध्यम से क्षेत्र हासिल करने की संभावना और मिसाल दोनों हैं। यहां तक कि कनाडा के जबरन विलय का किसी अन्य शक्ति द्वारा सैन्य रूप से विरोध किये जाने की संभावना बहुत कम है। अतीत में, अमेरिका, रूस, चीन, भारत, यूके, फ्रांस और इजरायल सहित कई सैन्य रूप से मजबूत देशों ने कई क्षेत्रों पर जबरन कब्जा किया या उन्हें अपने साथ बनाये रखा तथा इस क्रम में उन्हें किसी तीसरे पक्ष के बहुत कम विरोध का सामना करना पड़ा। 1950 में तिब्बत पर चीन का आक्रमण सभी विदेशी क्षेत्रीय विलयों में सबसे शांत था। तिब्बत पर चीनी सैन्य कब्जे की खबर, जिसे शदुनिया की छतश के रूप में जाना जाता है, इतनी धीमी गति से फैली कि 1952 तक अधिकांश तिब्बती इसके बारे में अनभिज्ञ थे। चीन ने झिंजियांग, हैनान और झोउशान सहित कई क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया है। तिब्बत चीन के कुल भूभाग का लगभग आठवां हिस्सा है। तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर)झिंजियांग के बाद क्षेत्रफल के हिसाब से चीन का दूसरा सबसे बड़ा प्रांत–स्तरीय विभाजन है। गैर–अनुरूपतावादी कम्युनिस्ट चीन ने झिंजियांग के इस्लामिक राज्य और तिब्बत के बौद्ध क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और रूस और कनाडा के बाद कुल भूमि क्षेत्र के हिसाब से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश बन गया। चीन, जो और अधिक चाहता है, का भारत, जापान, वियतनाम, भूटान और फिलीपींस सहित कई देशों के साथ क्षेत्रीय विवाद है। यह ताइवान और दक्षिण चीन सागर के क्षेत्र पर दावा करता है। चीन अक्साई–चीन पर शासन करता है, जिसे भारतीय क्षेत्र माना जाता है। कोई यह कह सकता है कि भारत ने खुद ही हैदराबाद, गोवा, दमन और दीव और सिक्किम पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश शासन से अपनी स्वतंत्रता के समय भारत के भीतर सभी राज्य स्वतंत्र क्षेत्र थे। भारत ने 1961 में गोवा पर कब्जा करने के बाद उसे पुर्तगाली नियंत्रण से अलग कर लिया। इंडोनेशिया ने 1963 में पश्चिमी न्यू गिनी पर कब्जा कर लिया। उत्तरी वियतनाम ने अमेरिकी सशस्त्र बलों के साथ लंबे युद्ध के बाद दक्षिण वियतनाम पर कब्जा कर लिया। इजराइल ने 1967 में पश्चिमी गोलनहाइट्स पर कब्जा कर लिया। उत्तरी साइप्रस 1974 से तुर्की के कब्जे में है। ब्रिटेन द्वारा नियंत्रित 14 विदेशी क्षेत्रों में से ये हैंरू एंगुइलाय बरमूडाय ब्रिटिश अंटार्कटिक क्षेत्र (बीएटी)य ब्रिटिश हिंद महासागर क्षेत्र (बीआईओटी)य ब्रिटिश वर्जिन द्वीपय केमैन द्वीपय फॉकलैंड द्वीपय जिब्राल्टरय मोंटसेराटय पिटकेर्न, हेंडरसन, ड्यूसी और ओनो द्वीपय सेंट हेलेना, असेंशन और ट्रिस्टनदाकुन्हाय और दक्षिण जॉर्जिया। विदेशी फ्रांस में यूरोप के बाहर 13 विदेशी क्षेत्र शामिल हैं। रूस खार्किव और मायकोलाइव के डोनेट्स्क, खेरसॉन, लुहान्स्क और जापोरिज्जिया ओब्लास्ट के कुछ हिस्सों को नियंत्रित करता है। यूक्रेन कुर्स्क ओब्लास्ट के कुछ हिस्सों को नियंत्रित करता है। इस प्रकार, ट्रम्प द्वारा कनाडा और ग्रीनलैंड को अधिग्रहित करने के विचार का खुलेआम प्रचार करना कोई नयी या असामान्य बात नहीं लगती। इससे पहले, कनाडा ब्रिटिश कब्जे में था। ग्रीनलैंड डेनमार्क साम्राज्य का एक स्वायत्त क्षेत्र है। कनाडा में अमेरिकी हित के विपरीत, अमेरिकी सरकार लंबे समय से ग्रीनलैंड को अपने अधीन करने की कोशिश कर रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, अमेरिका ने सैन्य रूप से कब्जा करने के लिए अपने मोनरो सिद्धांत का इस्तेमाल किया था। डेनमार्क के जर्मन सेना के सामने आत्मसमर्पण करने के बाद संभावित हिटलरी हमले से खुद को बचाने के लिए ग्रीनलैंड को 1951 में डेनमार्क सरकार के साथ एक संधि ने अमेरिका को ग्रीनलैंड की रक्षा पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी, जिसमें सैन्य रूप से संवेदनशील क्षेत्रों पर अनन्य अधिकार क्षेत्र भी शामिल है। कनाडा और ग्रीनलैंड को हासिल करने के अपने उद्देश्य को अमेरिका किस हद तक समझता है, यह आने वाले वर्षों में देखा जायेगा। अंतरराष्ट्रीय कानून सैन्य बल के माध्यम से किसी देश पर जबरन कब्जा करने की अनुमति नहीं देता है। अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत, विलय धमकी भरे बल का उपयोग करने के निषेध का उल्लंघन करता है और इसे अवैध माना जाना चाहिए। वास्तव में, कुछ देशों ने क्षेत्रों के विलय से पहले कानून का सम्मान करने की परवाह की है। दिलचस्प बात यह है कि विदेशी क्षेत्रों को अपने में मिलाने की अमेरिकी सरकार की क्षमता देश के संविधान में निहित है। अमेरिकी संविधान के अनुच्छेद– 2, खंड 2 में कहा गया है। उसे (राष्ट्रपति को) सीनेट की सलाह और सहमति से संधि करने की शक्ति होगी, बशर्ते कि उपस्थित सीनेटरों में से दो तिहाई सहमत हों.... अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के अंत के बाद से, देश का छोटा सा हिस्सा अधिग्रहण, अधिग्रहण और खरीद के मिश्रण के माध्यम से 50 राज्यों और 14 विदेशी क्षेत्रों तक फैल गया। ग्रीनलैंड और कनाडा अगले निशाने हो सकते हैं।

सैफ अली खान

पर धारदार हथियार से हमला, घर में घुसे लुटेरे ने किए 6 वार, एक्टर लीलावती अस्पताल में भर्ती

गुरुवार सुबह मुंबई स्थित अपने घर में चोरी की कोशिश के दौरान सैफ अली खान पर हमला होने की चौंकाने वाली खबर सामने आई। इंडिया टीवी के राजेश कुमार की रिपोर्ट के मुताबिक, घर में चोरी करने के लिए एक चोर घुसा था और नौकरानी से हाथापाई कर रहा था। उसे बचाने आए सैफ अली खान की पीठ पर मामूली चोट लग गई। फिलहाल उन्हें इलाज के लिए लीलावती अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बांद्रा पुलिस भी मौके पर पहुंच गई है। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, बुधवार रात को एक अज्ञात व्यक्ति अभिनेता के घर में घुस आया। चोर को देखकर उनके घर के कर्मचारी चिल्लाने लगे, जिसके बाद सैफ की नींद खुल गई। घटना के दौरान वह घायल हो गए, जबकि चोर को पकड़े जाने का डर था। अभिनेता को तुरंत मुंबई के लीलावती अस्पताल ले जाया गया। मुंबई पुलिस के डीसीपी जोन 9 दीक्षित गेदम ने कहा कि मामले की जांच चल रही है और मुंबई क्राइम ब्रांच भी मामले की समानांतर जांच कर रही है। घटना की सूचना मिलने के बाद बांद्रा पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस सूत्रों के अनुसार, सैफ अली खान के स्टाफ के सदस्यों के बयान नियमित रूप से दर्ज किए जाएंगे। पुलिस बिल्डिंग के सीसीटीवी फुटेज की भी जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार, सैफ अली खान पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने ही हमला किया था। फिलहाल, आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर पुलिस की ओर से कोई बयान नहीं आया है। सैफ अली खान अपनी पत्नी करीना कपूर खान और अपने दो बच्चों तैमूर और जेह के साथ मुंबई के बांद्रा में रहते हैं। वे बांद्रा पश्चिम में सतगुरु शरण बिल्डिंग में रहते हैं।

सैफ टीम की ओर से आधिकारिक बयान

श्री सैफ अली खान के घर पर चोरी की कोशिश की गई थी। वह फिलहाल अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती हैं। हम मीडिया और प्रशंसकों से अनुरोध करते हैं कि वे धैर्य रखें। यह पुलिस का मामला है। हम आपको स्थिति से अवगत कराते रहेंगे।

डॉक्टर ने क्या कहा?

लीलावती अस्पताल के सीओओ डॉ. नीरज उत्तमानी ने घटना के बारे में विस्तार से बताया और अभिनेता की वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति के बारे में जानकारी साझा की। हिंदुस्तान टाइम्स ने डॉक्टर के हवाले से बताया श्शसैफ पर उनके घर में किसी अज्ञात व्यक्ति ने हमला किया। उन्हें सुबह 3रू30 बजे लीलावती लाया गया। उन्हें छह चोटें आई हैं, जिनमें से दो गहरी हैं। एक चोट उनकी रीढ़ के करीब है। हम उनका ऑपरेशन कर रहे हैं। उनका ऑपरेशन न्यूरोसर्जन नितिन डांगे, कॉस्मेटिक सर्जन लीना जैन और एनेस्थेटिस्ट निशा गांधी कर रहे हैं। सर्जरी होने के बाद ही हमें नुकसान की सीमा के बारे में पता चलेगा।

काम के मोर्चे पर

पेशेवर मोर्चे पर, सैफ अली खान को आखिरी बार जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर के साथ पैन–इंडिया फिल्म देवरारू पार्ट वन में देखा गया था। उनके पास गो गोवा गॉन 2, रेस 4, ज्वेल थीफ, क्लिक शंकर, स्पिरिट, प्रियदर्शन के साथ एक अनटाइटल्ड प्रोजेक्ट और उनकी बेटी सारा अली खान सहित कई बड़ी परियोजनाएँ हैं।

अनुष्का शर्मा के आड़े आई मुश्किल, पति विराट कोहली के साथ ज्यादा समय विदेश में नहीं रह पाएंगी एक्ट्रेस

अनुष्का शर्मा और विराट कोहली को अक्सर एक साथ देखा जाता है। अनुष्का विराट के हर मैच में उनके साथ होती हैं, चाहे वह जीत हो, हार हो या सेंचुरी, अनुष्का के रिएक्शन सोशल मीडिया पर वायरल हो जाते हैं। विराट भी अक्सर स्टेडियम में अनुष्का के साथ बातचीत करते हुए दिखाई देते हैं। अब खबरें हैं कि अनुष्का शर्मा अपने पति विराट के साथ विदेश दौरे पर ज्यादा दिन नहीं रह पाएंगी। बीसीसीआई ने हाल ही में क्रिकेट खिलाड़ियों के लिए विदेश दौरे पर अपनी पत्नी और परिवार को साथ ले जाने के नए नियम जारी किए हैं। बोर्ड का मानना है कि परिवार और पत्नी के साथ होने के कारण खिलाड़ियों की प्रदर्शन पर असर पड़ता है। उदाहरण के तौर पर, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज में विराट कोहली और केएल राहुल की पत्नियां स्टेडियम में देखी गई थीं, जिनके वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए थे। 2014 में, जब विराट कोहली और अनुष्का शर्मा एक–दूसरे को डेट कर रहे थे, तब बीसीसीआई ने एक नया नियम लागू किया था जिसमें खिलाड़ियों को अपनी गर्लफ्रेंड्स को भी विदेश दौरे पर साथ लाने की अनुमति दी गई थी। यह नियम विराट की कप्तानी में आया था, और उन्होंने तत्कालीन हेड कोच रवि शास्त्री से अनुमति ली थी। अनुष्का शर्मा इन दिनों फिल्मी दुनिया से थोड़ा ब्रेक लेकर अपने परिवार और विराट के साथ समय बिता रही हैं। वह विराट के साथ हर जगह होती हैं और दोनों लंदन में भी काफी समय बिताते हैं। वहीं, अनुष्का ने बेटे अकाय को लंदन में जन्म दिया था। हाल ही में, दोनों प्रेमानंद महाराज से मिलने भी गए थे, जहां उनके बच्चे भी उनके साथ थे, और इसके बाद वे अलीबाग गए थे।

दिग्गज एक्टर सरिगामा विजी का 77 की उम्र में निधन, अस्पताल में इलाज के बीच कहा दुनिया को अलविदा

मनोरंजन जगत से हाल ही में एक बुरी खबर सामने आई है। दिग्गज कन्नड़ एक्टर सरिगामा विजी का निधन हो गया है। वह 77 वर्ष की आयु में इस दुनिया को अलविदा कह गए हैं। पिछले चार दिनों से वह यशवंतपुर के मणिपाल अस्पताल में भर्ती थे और इलाज के बीच ही वह इस दुनिया को अलविदा कह गए। 12 जनवरी को सरिगामा की तबीयत थोड़ी ज्यादा बिगड़ गई, जिसके बाद उन्हें इंटेंसिव केयर युनिट में शिफ्ट किया गया था। उनके कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया था। डॉक्टरों की लाख कोशिशों के बावजूद सरिगामा विजी ठीक नहीं हो पाए और इस दुनिया को अलविदा कह गए।उनके पार्थिव शरीर को आज दोपहर 1 बजे महालक्ष्मीपुरम स्थित उनके आवास पर ले जाया गया है, जहां उनके करीबी और रिश्तेदार उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। उनका अंतिम संस्कार कल सुबह 10 बजे चामराजपेट श्मशान घाट पर होगा।सरिगामा विजी कन्नड़ फिल्म और टीवी इंडस्ट्री के एक जाने माने एक्टर थे। उन्होंने अपने करियर में कई सफल फिल्में भी दी हैं। ऐसे में उनका इस दुनिया से चले जाना फिल्म इंडस्ट्री और उनके फैंस के लिए बहुत बड़ी क्षति है। सरिगामा ने 1975 में कन्नड़ फिल्म बेलुवलदा मदिलाली से अपने करियर की शुरुआत की थी। साल 2018 तक उन्होंने 250 से अधिक कन्नड़ फिल्में कर ली थी। 80 फिल्मों में सहायक निर्देशक के रूप में भी वो काम कर चुके थे। बेंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद और मुंबई जैसे शहरों में उनके द्वारा निर्देशित थिएटर एक्ट के 1000 शो रखे गए थे। इस नाटक का नाम संसारदल्ली सरिगामा था।

पत्रकारों पर मंडराते खतरे को दिखाती है फिल्म डिस्पैच

वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भारत 159वें स्थान पर आता है. यहां हर साल कई पत्रकार अपनी जान गंवा देते हैं. ऐसी ही एक घटना के बाद निर्देशक कनु बहल को डिस्पैच फिल्म बनाने का ख्याल आया, जो पिछले साल दिसंबर में रिलीज हुई. साल 2025 की शुरुआत में, छत्तीसगढ़ में एक जमीनी पत्रकार की हत्या कर दी गई. बीजापुर जिले में हुई इस हत्या के ब्योरे डराने वाले थे. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, 32 वर्षीय मुकेश चंद्रकार ने एक सड़क निर्माण में हुए भ्रष्टाचार को उजागर किया था, जिसके बाद उनकी हत्या कर दी गई. पोस्टमार्टम रिपोर्ट के हवाले से बताया गया कि उनके सिर में 15 फ्रैक्चर आए थे, गर्दन टूट गई थी और लिवर के चार टुकड़े हो गए थे. यह घटना भारत में पत्रकारिता करने के जोखिम को दिखाती है.डायरेक्टर कनु बहल ने भी ऐसी ही एक घटना के बाद डिस्पैच फिल्म बनाने के बारे में सोचा था. उनकी यह फिल्म हाल ही में जर्मनी में भारत सरकार द्वारा आयोजित करवाए गए इंडियन फिल्म फेस्टिवल में दिखाई गई. इस फिल्म में एक ऐसे पत्रकार की कहानी दिखाई गई है जिसमें व्यक्तिगत तौर पर बहुत कमियां हैं लेकिन वह अपने काम के लिए बहुत जुनुनी है. करोड़ों रुपए के एक घोटाले की तह तक जाने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार है. फिल्म में पत्रकार का किरदार मनोज बाजपेयी ने निभाया है. उनके अलावा, शाहना गोस्वामी, अर्चिता अग्रवाल और री सेन की भी अहम भूमिका है. कनु बहल ने बर्लिन में डीडब्ल्यू हिंदी से अपनी फिल्म के बारे में बातचीत की. उन्होंने बताया, षडिस्पैच फिल्म बनाने का विचार सबसे पहले साल 2017 में आया था, जब पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या हुई. उस समय मैंने और इस फिल्म में मेरी सह–लेखक ईशानी बनर्जी ने इस बारे में बात करना शुरू किया. हमें ऐसा महसूस हुआ कि कुछ बहुत बड़ा बदल रहा है. कुछ अलग हो रहा है लेकिन पूरा समझ में नहीं आ रहा था. फिर हम धीरे–धीरे खोजने लगे कि हम इस घटना की वजह से इतना ज्यादा परेशान क्यों हो रहे हैं." उन्होंने आगे बताया, काम करते वक्त हमें समझ आया कि हमें पत्रकारिता की दुनिया के बारे में ज्यादा पता नहीं है तो हमें रिसर्च करनी पड़ेगी. रिसर्च के दौरान, पत्रकारिता से जुड़े जिन लोगों से हमने बात की, उनमें से ज्यादातर ने कहा कि अब पत्रकारिता की दुनिया इतनी धुंधली हो चुकी है कि कौन, कहां, क्या और कब कर रहा है, वो अब पता चलना भी संभव नहीं है. तो ये हमारे लिए बहुत दिलचस्प बात बन गई. उन्होंने आगे कहा, ष्पत्रकारिता पर बनी लगभग सारी फिल्में एक हीरो के बारे में होती हैं. हीरो एक स्टोरी पर काम करता है और सब हल कर देता है. लेकिन जिन बातों का पता नहीं लगाया जा सकता, उनके बारे में कोई बात क्यों नहीं करता. तो ये हमारे लिए एक शुरुआती बिंदु बन गया और हमने इसी पर आगे काम किया." कनु बहल ने डीडब्ल्यू हिंदी को बताया, मेरे लिए एक बड़ी प्रेरणादायक फिल्म रही है न्यू डेल्ही टाइम्स, जो मैंने एक युवा के तौर पर देखी थी. यह शशि कपूर की काफी पुरानी फिल्म है, जो बहुत दिलचस्प है. पत्रकारिता की दुनिया से जुड़ी और भी कई दिलचस्प फिल्में हैं लेकिन उनका यूनिवर्स अलग है और उस यूनिवर्स में वो फिल्में अपने किरदारों को अलग–अलग तरह से और अलग–अलग निगाह से देखती हैं."उन्होंने आगे कहा, ष्न्यू डेल्ही टाइम्स हमेशा से मुझे प्रिय रही है. उसकी कुछ–कुछ यादें थी और उसकी कुछ छवियां याद थीं और ये याद था कि जब मैंने युवा उम्र में उसे देखा था तो उसने मुझे काफी प्रभावित किया था. जब हम शुरुआत में डिस्पैच के आइडिया पर चर्चा करते थे तो मैं न्यू डेल्ही टाइम्स के बारे में काफी सोचता था."पिछले साल दिसंबर में ओटीटी पर रिलीज हुई डिस्पैच को फिल्म आलोचकों से मिली–जुली प्रतिक्रिया मिली हैं. इंडियन एक्सप्रेस ने अपनी समीक्षा में लिखा कि फिल्म अपने हिस्सों को जोड़कर एक बढ़िया तस्वीर पेश नहीं कर पाती है और इसके पात्र आते–जाते रहते हैं, जिससे दर्शक असमंजस में पड़ जाते हैं. हालांकि, इसमें मनोज बाजपेयी की प्रतिबद्धता की तारीफ की गई है. द हिंदू की समीक्षा में फिल्म में अभिनय और कैमरावर्क की तारीफ की गई है. इसमें कहा गया है, कनु बहल की यह फिल्म असहज कर देने वाले सच के काफी करीब है. इसमें एक ऐसी दुनिया दिखायी गई है, जहां सूचनाओं की कीमत है, लोगों की चुप्पियां खरीदी जाती हैं और रिश्ते लेन–देन पर आध ाारित होते हैं. इंडिया टुडे की समीक्षा में कहा गया है कि फिल्म मुख्य कलाकारों के शानदार अभिनय के बावजूद, कमजोर कहानी की वजह से संघर्ष करती नजर आती है. वहीं, अमर उजाला की समीक्षा में लिखा है कि यह फिल्म हंसल मेहता की वेबसीरीज स्कूप देख चुके दर्शकों को दिलचस्प लग सकती है. भारत में बनी कई फिल्मों में पत्रकारों की दुनिया को दिखाया गया है. इनमें से कुछ फिल्में पूरी तरह से पत्रकारिता के इर्द–गिर्द घूमती हैं, वहीं कुछ फिल्मों में पत्रकार अहम किरदार निभाते नजर आते हैं. जैसे, साल 2001 में आयी फिल्म 'नायक, जिसमें अनिल कपूर एक टीवी पत्रकार होते हैं और एक इंटरव्यू के बाद राज्य के मुख्यमंत्री बन जाते हैं. यह एक तमिल फिल्म की रीमेक थी. 1983 में आयी 'जाने भी दो यारो की गिनती अब क्लासिक फिल्मों में होती है. इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह और रवि बासवानी ने फोटोजर्नलिस्ट का किरदार निभाया था. 'फिर भी दिल है हिंदुस्तानी में शाहरूख खान और जूही चावला रिपोर्टर के किरदार में नजर आए. साल 2005 में आयी 'पेज 3 फिल्म में एक पत्रकार के नजरिए से मुबंई के मनोरंजन जगत को दिखाया गया है. वहीं, 2011 में आयी फिल्म 'नो वन किल्ड जेसिका में रानी मुखर्जी एक पत्रकार की भूमिका में नजर आयी हैं. हाल के सालों की बात करें तो 'धमाका फिल्म में कार्तिक आर्यन ने टीवी एंकर का किरदार निभाया था. 2022 में आयी फिल्म जलसा में विद्या बालन एक वरिष्ठ पत्रकार बनी हैं. 'द ब्रोकन न्यूज वेब सीरीज में मीडिया चौनलों की आपसी लड़ाई दिखाई गई है. इसके अलावा, हाल ही में आयी ' द साबरमती रिपोर्ट में भी पत्रकारों को फिल्म का मुख्य किरदार बनाया गया है. 'इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ जर्नलिस्ट्स के मुताबिक, साल 2024 में दुनियाभर में 122 पत्रकार मारे गए थे. इनमें तीन भारतीय पत्रकार– सलमान अली खान, शिवशंकर झा और आशुतोष श्रीवास्तव भी शामिल थे. वहीं, 'कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स के मुताबिक, भारत में साल 2000 से 2025 के बीच 73 पत्रकार और मीडियाकर्मी मारे गए हैं. 'रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर स्वतंत्र पत्रकारिता के लिए काम करने वाला एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है. यह हर साल वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स जारी करता है. इसका उद्देश्य अलग–अलग देशों में पत्रकारों और मीडिया को मिली आजादी के स्तर की तुलना करना है. साल 2024 में 180 देशों की इस लिस्ट में भारत 159वें नंबर पर था. पड़ोसी देश चीन, बांग्लादेश और अफगानिस्तान को भारत से भी नीचे जगह मिली थी।

पार्टी में दिखना चाहती हैं क्लासी तो बनाएं ये हेयर स्टाइल, दिखेंगी बेहद खूबसूरत

अक्सर जब भी हम कहीं जाने के लिए तैयार होते हैं, तो सबसे पहले आउटफिट सिलेक्ट करते हैं। इसके बाद मेकअप लुक चूज करते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि मेकअप करने से पूरा लुक चेंज हो जाता है। अब बारी होती है हेयर स्टाइल की। कई बार हम स्लीक हेयर स्टाइल बना लेते हैं, क्योंकि यह आसानी से बन जाते हैं। लेकिन यह हर किसी पर अच्छी नहीं लगती है। ऐसे में जरूरी है कि आप कुछ अलग ट्राई करें। आप अलग हेयर स्टाइल चाहती हैं, तो बाउंसी हेयर स्टाइल बना सकती हैं। इससे आपका लुक पहले से ज्यादा खूबसूरत नजर आएगा। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि किस तरह के बाउंसी हेयर स्टाइल आप क्रिएट कर सकती हैं।

पफ के साथ बनाएं पोनीटेल

अक्सर हम सिंपल तरीके से पोनीटेल बना लेते हैं। लेकिन यह हर किसी को अच्छी नहीं लगती है। ऐसे में जरूरी है कि आप बालों को बाउंस दें। जिससे कि अलग तरह का हेयर स्टाइल बनाया जा सके। इसके लिए सबसे पहले बालों में कर्लिंग मशीन से बाउंस क्रिएट करें। अब कुछ बालों को पिन की मदद से ऊपर की तरफ सेट करें। इससे पफ बन जाएगा। अब पोनीटेल बना लें। इससे आपके बालों में बाउंस आएगा और हेयर स्टाइल भी अच्छा लगेगा। आप चाहें तो इसके साथ साइड ब्रेड भी बना सकती हैं।

फ्लावर डिजाइन हेयर स्टाइल

अगर आप किसी पार्टी या फंक्शन में जाने के लिए तैयार हो रही हैं, तो आप फ्लावर डिजाइन वाला हेयर स्टाइल को क्रिएट कर सकती हैं। इसमें सारे बालों को कर्ल किया जाता है। फिर राउंड पफ बनाकर सेट किया जाता है। वही पीछे की तरफ ब्रेड बनाकर इसे घुमाने के बाद फ्लावर बनाया जाता है। यह हेयर स्टाइल काफी अच्छा लगता है। बाकी बचे बालों को कर्ल कर लें। आप चाहें तो थोड़े से बालों को आगे की तरफ निकालकर भी कर्ल कर सकती हैं। अब बालों में एक्सेसरीज लगा लें। यह हेयर स्टाइल बनने के बाद अच्छा लगता है और इसमें आपका लुक भी अट्रैक्टिव लगता है।

ओपन हेयर स्टाइल को दें बाउंस

बता दें कि बाउंसी बाल आपके फेस को छोटा और लुक को अट्रैक्टिव बनाने का काम करता है। इसको करने के लिए पूरे बालों में लूज कर्ल करना है। फिर आगे की तरफ साइड पार्टीशन करके अच्छा सा हेयर बैंड लगाएं। अब पीछे के बालों को स्प्रे की मदद से सेट कर लें। इस तरह से हेयर स्टाइल बन जाएगा। आप किसी भी आउटफिट के साथ इस हेयर स्टाइल को क्रिएट कर सकती हैं। इस हेयर स्टाइल को बनाने में सिर्फ 20 मिनट का समय लगेगा।

फोन की नोटिफिकेशन सुनते ही तुरंत उठा लेते हो फोन ? ये आदत कर रही है आपका दिमाग हाईजैक

मोबाइल फोन में नोटिफिकेशन बेल्स की आवाज आजकल हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गई है। यह हमें हर छोटी–बड़ी जानकारी से जोड़ती है, लेकिन कई बार इनकी आवाज सुनते ही मन में चिंता या घबराहट का अहसास होने लगता है। अगर आप पर भी इन बेल्स से परेशान रहते हैं तो अपने फोन के उपयोग को सीमित करके और समय–समय पर ब्रेक लेकर आप अधिक शांत और तनावमुक्त महसूस कर सकते हैं। आइए जानते हैं चिंता को कम करने के आसान तरीके क्या हो सकते हैं।

नोटिफिकेशन बेल्स से चिंता क्यों होती है?

लगातार नोटिफिकेशन हमें अत्यधिक जानकारी से भर देते हैं। यह दिमाग को आराम करने का मौका नहीं देता, जिससे चिंता बढ़ सकती है। काम से जुड़े नोटिफिकेशन आने पर यह डर होता है कि कहीं कोई महत्वपूर्ण काम छूट न जाए। इससे तनाव बढ़ता है। कई बार यह डर सताता है कि अगर हमने कोई नोटिफिकेशन मिस कर दिया, तो हम कुछ महत्वपूर्ण चीजों से चूक सकते हैं। यह चिंता का एक बड़ा कारण है। बार–बार नोटिफिकेशन आने से ध्यान भंग होता है, जिससे मानसिक थकान और चिंता बढ़ सकती है।

चिंता कम करने के सरल उपाय

केवल उन्हीं ऐप्स की नोटिफिकेशन ऑन रखें, जो वास्तव में जरूरी हैं। बाकी की नोटिफिकेशन को बंद कर दें। काम या आराम के समय डू नॉट डिस्टर्ब मोड का उपयोग करें। इससे अनावश्यक नोटिफिकेशन से बचा जा सकता है। दिन में एक या दो बार ही नोटिफिकेशन चेक करने की आदत डालें। इससे हर बार फोन देखने की जरूरत कम हो जाएगी। नियमित व्यायाम से मानसिक तनाव और चिंता को कम किया जा सकता है। योग और ध्यान भी इसमें मददगार हो सकते हैं।

सोशल मीडिया ब्रेक

समय–समय पर सोशल मीडिया से ब्रेक लें। यह मानसिक शांति के लिए आवश्यक है। सोने से पहले फोन को अपने पास न रखें। इससे नींद की गुणवत्ता में सुधार होगा और चिंता कम होगी। नोटिफिकेशन की आवाज हमें सूचना की अति, काम के दबाव, और ध्यान भटकने के कारण चिंतित कर सकती है। नोटिफिकेशन को सीमित करने, डू नॉट डिस्टर्ब मोड का उपयोग करने, और नियमित फिजिकल एक्टिविटी से इस चिंता को कम किया जा सकता है।

नोमोफोबिया का शिकार हो रहे लोग

नोमोफोबिया एक आधुनिक मानसिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति को मोबाइल फोन के बिना रहने या उससे अलग होने का अत्यधिक डर और चिंता होती है। नोमोफोबिया शब्द नो–मोबाइल–फोन–फोबिया से बना है, जिसका अर्थ है मोबाइल फोन न होने का डर। एक्सपटर्स का कहना है कि कि दिन–रात फोन पर बिताए गए समय की वजह से लोग एक दायरे में बंध जाते हैं। फोन ही उन्हें वास्तविक दुनिया लगती है। इसी दुनिया से छूटने के डर से वह इस मेंटल कंडीशन के शिकार हो रहे हैं।

नोमोफोबिया के लक्षण

–मोबाइल फोन खोने का डर या बैटरी खत्म होने पर बेचौनी।

–सिग्नल न मिलने या नेटवर्क से बाहर होने पर घबराहट।

– मोबाइल फोन घर पर छोड़ आने पर असहज महसूस करना ।

–लगातार फोन चेक करना, भले ही कोई नोटिफिकेशन न आया हो।

–बिना किसी जरूरी काम के भी फोन का अत्यधिक उपयोग करना।

–मोबाइल के बिना रहने से तनाव, बेचौनी, और पसीना आना।

सर्दियों में घंटों धूप में बैठते हैं ? सावधान इन 5 बीमारियों का बढ़ सकता है खतरा

सर्दियों के मौसम में धूप सेंकना बेहद सुखद लगता है। यह न केवल ठंड से राहत देता है बल्कि विटामिन डी का अच्छा स्रोत भी माना जाता है। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि घंटों तक ध ूप में बैठने की आदत से आपकी सेहत को नुकसान हो सकता है? अत्यधिक समय तक धूप में रहने से कुछ गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। आइए जानते हैं कि यह आदत किन 5 रोगों का खतरा बढ़ा सकती है और इससे बचने के उपाय।

त्वचा कैंसर

अत्यधिक समय तक धूप में रहने से त्वचा पर यूवी (यूवी) किरणों का प्रभाव बढ़ता है। ये किरणें त्वचा की कोशिकाओं को क्षतिग्रस्त कर सकती हैं और लंबे समय में त्वचा कैंसर का खतरा बढ़ा सकती हैं। खासतौर पर, अगर आप बिना किसी सुरक्षा उपाय के सीधे धूप में बैठते हैं, तो यह खतरा और अधिक बढ़ जाता है।

बचाव के उपायः हमेशा सनस्क्रीन का उपयोग करें, जिसमें कम से कम एसपीएफ 30 हो। सिर और चेहरे को ढकने के लिए हैट या स्कार्फ का इस्तेमाल करें। सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे के बीच धूप में बैठने से बचें।

समय से पहले बुढ़ापा

सर्दियों की धूप में घंटों बैठने से त्वचा पर झुर्रियां और दाग–धब्बे दिखाई देने लगते हैं। यह फोटोएजिंग कहलाता है, जिसमें त्वचा समय से पहले बूढ़ी नजर आने लगती है। यूवी किरणें त्वचा की इलास्टिसिटी को कम कर देती हैं, जिससे त्वचा ढीली और रूखी हो जाती है।

बचाव के उपायः नियमित रूप से मॉइस्चराइजर का उपयोग करें। धूप में जाने से पहले एंटी–एजिंग क्रीम लगाएं। सनग्लासेस पहनें ताकि आंखों के आसपास की त्वचा सुरक्षित रहे।

डिहाइड्रेशन

सर्दियों में ठंड के कारण हमें प्यास कम लगती है, लेकिन लंबे समय तक धूप में रहने से शरीर में पानी की कमी हो सकती है। यह डिहाइड्रेशन का कारण बन सकता है, जिससे कमजोरी, चक्कर आना और सिरदर्द जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

बचाव के उपायः पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं, भले ही आपको प्यास न लगे। तरल पदार्थ जैसे नारियल पानी और फलों का रस अपने आहार में शामिल करें। धूप में बैठते समय एक बोतल पानी अपने साथ रखें।

हीट रैश और सनबर्न

सर्दियों में ठंडी हवा के कारण हमें धूप की गर्मी का एहसास कम होता है, लेकिन यूवी किरणें हमारी त्वचा को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इससे सनबर्न और हीट रैश की समस्या हो सकती है। यह स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब त्वचा लंबे समय तक धूप के संपर्क में रहती है।

बचाव के उपायः धूप में बैठने से पहले त्वचा पर लोशन या सनब्लॉक लगाएं।हल्के और ढीले कपड़े पहनें जो आपकी त्वचा को कवर करें। यदि सनबर्न हो जाए, तो प्रभावित क्षेत्र पर एलोवेरा जेल लगाएं।

इम्यून सिस्टम पर प्रभाव

अत्यधिक धूप में बैठने से शरीर में फ्री रेडिकल्स का उत्पादन बढ़ सकता है, जो इम्यून सिस्टम को कमजोर कर सकता है। इससे आपके शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो सकती है।

बचाव के उपायः धूप में बैठने का समय सीमित रखें। एंटीऑक्सिडेंट्स से भरपूर भोजन करें, जैसे हरी सब्जियां और फल। पर्याप्त नींद लें और तनाव से बचें।

संतुलन बनाए रखना है जरूरी

सर्दियों में धूप सेंकना फायदेमंद हो सकता है, लेकिन संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है। धूप से मिलने वाला विटामिन डी हड्डियों को मजबूत बनाता है और मूड को बेहतर करता है, लेकिन जरूरत से ज्यादा समय धूप में बिताने से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

सही तरीकाः दिन में 15–20 मिनट धूप में बैठना पर्याप्त है। धूप सेंकने का सबसे अच्छा समय सुबह 8 से 10 बजे तक होता है। धूप में बैठने के बाद त्वचा को साफ और मॉइस्चराइज करना न भूलें।

सर्दियों में धूप में बैठना भले ही आरामदायक लगता हो, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। त्वचा कैंसर, समय से पहले बुढ़ापा, डिहाइड्रेशन, सनबर्न, और इम्यून सिस्टम पर प्रभाव जैसे जोखिमों से बचने के लिए धूप में बैठने की आदत को नियंत्रित करें। सही समय, सही उपाय और थोड़ी सावधानी के साथ आप सर्दियों की धूप का लाभ उठा सकते हैं और अपनी सेहत को भी सुरक्षित रख सकते हैं।

मिनटों में दूर होगी डैंड्रफ की समस्या, घर पर बनाएं ये हेयर पैक, एक बार में ही दिखेगा असर

सर्दियों में डैंड्रफ की समस्या सबसे अधिक होती है। इन दिनों डैंड्रफ की समस्या सबसे कॉमन है। ज्यादातर लोगों के बालों में ये समस्या रहती है। इस समस्या के कारण बाल खराब हो जाते हैं, स्कैल्प ड्राई दिखने लगता है, जिस कारण से हम कोई भी आउटफिट पहनें तो कपड़ों पर डैंड्रफ दिखाई देता है। इसलिए हमें पार्लर जाकर महंगे ट्रीटमेंट या प्रोडक्ट का इस्तेमाल करते हैं। हालांकि, जरुरी नहीं है कि इसका असर रहे। इसलिए आप चाहे तो घरेलू नुस्खों को ट्राई कर सकते हैं। आइए आपको इन नुस्खे के बारे में बताते हैं।

हेयर पैक बनाने के लिए सामग्री

– एलोवेरा जेल– 2 चम्मच

– करी पत्ता – 10 से 12

– शहद – 1 चम्मच

– नींबू का रस

हेयर पैक बनाने का तरीका

– सबसे पहले आप एक बाउल में फ्रेश एलोवेरा जेल निकाल लें।

– फिर करी पत्ते को अच्छे से मैश करें।

– अब इसमें एलोवेरा जेल को मैश करें।

– इसके बाद इसमें शहद को मिला लीजिए।

– अब इसमें नींबू को मिक्स करें।

– इस पेस्ट को तैयार करें।

कैसे लगाएं बालों में लगाएं हेयर पैक

– सबसे पहले अपने बालों को कॉम्ब करें।

– इसके बाद स्कैल्प में इस पैक को यूज करें।

– इसे लगाने के बाद अच्छे से मसाज करें।

– अब इसको 30 मिनट तक लगाएं रखें।

– आखिर में इसे शैंपू से साफ कर लें।

– इसके यूज से आपकी डैंड्रफ की समस्या कम हो जाएगी।

संक्षिप्त

सीसीआई के 213.14 करोड़ रुपये के जुर्माने के खिलाफ मेटा, व्हाट्सएप की याचिका स्वीकार

नई दिल्ली, एजेंसी। अपीलीय न्यायाधिकरण एनसीएलएटी ने निष्पक्ष व्यापार नियामक सीसीआई के आदेश के खिलाफ मेटा प्लेटफॉर्म्स और व्हाट्सएप की याचिकाएं गुरुवार को स्वीकार कर लिया। सीसीआई ने बाजार प्रभुत्व के दुरुपयोग के लिए 213.14 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया था। इस मुद्दे पर मेटा और सीसीआई की प्रारंभिक दलीलें सुनने के बाद राष्ट्रीय कंपनी कानून अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलएटी) की दो सदस्यीय पीठ ने कहा कि इस मुद्दे पर विचार करने की आवश्यकता है। एनसीएलएटी की पीठ ने कहा, हमारा मानना है कि पक्षों द्वारा प्रस्तुत दलीलों पर विचार करने की जरूरत है। हम दोनों अपीलों को स्वीकार करते हैं। पीठ में इसके अध्यक्ष न्यायमूर्ति अशोक भूषण भी शामिल थे। हालांकि, सीसीआई के आदेश पर रोक लगाने संबंधी अंतरिम राहत के बारे में एनसीएलएटी ने कहा कि वह अगले सप्ताह फैसला करेगा। कार्यवाही के दौरान, व्हाट्सएप और मेटा प्लेटफॉर्म की ओर से पेश हुए वकील ने अपीलीय न्यायाधिकरण से सीसीआई के आदेश पर रोक लगाने का अनुरोध किया। हालांकि, भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग की ओर से पेश हुए वकील ने इसका विरोध किया। 18 नवंबर को, भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (ब्ब्) ने 2021 में किए गए व्हाट्सएप गोपनीयता नीति अपडेट के संबंध में अनुचित व्यावसायिक तरीकों के लिए सोशल मीडिया प्रमुख मेटा पर 213.14 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया था। इसके अलावा, प्रतिस्पर्धा नियामक ने मेटा को प्रतिस्पर्धा–विरोधी गतिविधियों को बंद करने और उनसे दूर रहने का निर्देश दिया। सीसीआई के आदेश के अनुसार, मेटा और व्हाट्सएप को प्रतिस्पर्धा विरोधी मुद्दों के समाधान के लिए एक निर्धारित समयसीमा के भीतर कुछ व्यवहारिक उपायों को लागू करने के लिए भी कहा गया है।

मेटा करने वाला है बड़े स्तर पर छंटनी, 3600 कर्मचारियों की जा सकती है नौकरी

नई दिल्ली, एजेंसी। सोशल मीडिया कंपनी मेटा के उपर संकट के बाद लगातार मंडरा रहे हैं। मेटा प्लेटफॉर्म्स इस साल अपने पांच प्रतिशत कर्मचारियों को बाहर का रास्ता दिखाने की योजना बना रही है। 'ब्लूमबर्ग न्यूज' की रिपोर्ट के अनुसार, इसके तहत प्रदर्शन के आधार पर कर्मचारियों को हटाया जाएगा और उनके स्थान पर नए कर्मचारियों को नियुक्त किया जाएगा। रिपोर्ट के अनुसार, मेटा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) मार्क जुकरबर्ग ने कर्मचारियों को भेजे एक आंतरिक नोट में कहा कि वह 'प्रदर्शन प्रबंधन के स्तर को बढ़ाना चाहते हैं और कम प्रदर्शन करने वालों को तेजी से बाहर निकालना चाहते हैं। ब्लूमबर्ग ने मंगलवार को बताया कि हाल ही में दी गई जानकारी के अनुसार, मेटा में लगभग 72,000 कर्मचारी काम करते हैं। इस प्रकार, पांच प्रतिशत यानी लगभग 3,600 कर्मचारियों की छंटनी की जाएगी। कैलिफोर्निया के मेनलो पार्क स्थित मेटा फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और थ्रेड्स की मूल कंपनी है। कंपनी ने बुधवार को इस संबंध में टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। हालांकि, कंपनी ने कहा कि ब्लूमबर्ग की रिपोर्टिंग सटीक है। ब्लूमबर्ग ने कहा कि अमेरिका में जो श्रमिक प्रभावित होंगे उन्हें 10 फरवरी को सूचित किया जाएगा, जबकि अन्य देशों में कार्यरत श्रमिकों को बाद में सूचित किया जाएगा।

केएल राहुल नहीं बल्कि अक्षर पटेल हो सकते हैं दिल्ली कैपिटल्स के नए कप्तान

आईपीएल 2025 का सीजन 21 मार्च से शुरू होगा। इससे पहले इस सीजन के लिए नवंबर में मेगा ऑक्शन आयोजित हुआ था, जहां कई खिलाड़ियों को खरीदा गया। वहीं दिल्ली कैपिटल्स फ्रेंचाइजी ने भी केएल राहुल को खरीदा था। राहुल को टीम ने 14 करोड़ रुपये में खरीदा था। राहुल इससे पहले लखनऊ सुपर जायंट्स में थे और टीम के कप्तान भी थे। लेकिन दिल्ली में कप्तानी मिलना मुश्किल हा है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दिल्ली की कप्तानी अक्षर पटेल को मिल सकती है अक्षर टीम के साथ काफी वक्त से हैं और कई बार ऑलराउंडर की भूमिका निभा चुके हैं। वहीं दिल्ली अक्षर को आईपीएल 2025 के लिए 16.50 करोड़ रुपये सैलरी के रूप में देगी। अक्षर टीम के सबसे महंगे खिलाड़ी भी हैं। दिल्ली कैपिटल्स ने लखनऊ के केएल राहुल को खरीदा था। वहीं लखनऊ ने दिल्ली के ऋषभ पंत को खरीदा। ऋषभ भी दिल्ली के कप्तान थे। अक्षर आईपीएल में अभी तक कुल 150 मैच खेल चुके हैं। उन्होंने इस दौरान 1653 रन बनाए हैं। अक्षर ने बॉलिंग में भी कमाल दिखाया है, उन्होंने इस दौरान 123 विकेट अपने नाम किए हैं। फिलहाल, बता दें कि, अक्षर ने पिछले आईपीएल सीजन के 14 मैचों में 11 विकेट लिए थे।

कुलदीप यादव ने शुरू की गेंदबाजी की प्रैक्टिस, चौंपियंस ट्रॉफी से पहले खेल पाएंगे इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज?

कुलदीप यादव ने टीम इंडिया में वापसी की शुरुआत कर दी है। जर्मनी में ग्रोइन इंजरी के बाद उनकी सर्जरी हुई थी और अब वो कमबैक की रहा पर हैं। कुलदीप ने नेशनल क्रिकेट एकेडमी में गेंदबाजी का अभ्यास शुरू कर दिय है हालांकि, ये अब तक साफ नहीं हो पाया है कि वो कबतक वापसी करेंगे। बीसीसीआई ने भी कुलदीप की फिटनेस को लेकर अब तक तस्वीर साफ नहीं की है। कुलदीप यादव को इंग्लैंड के खिलाफ 22 जनवरी से शुरू होने वाली टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम में चुना नहीं गया है। इस टी20 सीरीज के बाद भारत को फरवरी के पहले हफ्ते में इंग्लैंड से 3 वनडे खेलने हैं और कुलदीप की नजर इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज खेलने पर होगी। हालांकि, अभी ये साफ है कि वो 100 फीसदी फिट नहीं है। बता दें कि, कुलदीप यादव पिछले साल अक्टूबर से ही मैदान से दूर हैं। वो न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट ीरीज में भी नहीं खेले थे और चोट के कारण बीजीटी में भी नहीं खेल पाए थे।

क्या पत्नियों को साथ ले जाने से रोककर सुधरेगी टीम? हर्षा भोगले ने BCCI से इस पर बैन लगाने को कहा

मुंबई, एजेंसी। बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया से हार के बाद भारतीय क्रिकेट में सबकुछ सही नहीं चल रहा है। हर रोज कई अलग–अलग रिपोर्ट्स सामने आ रही हैं। अब दिग्गज कमेंटेटर हर्षा भोगले ने बीसीसीआई के सामने नई मांग रखी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर बोर्ड को सलाह दिया है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) भारतीय टीम के हालिया प्रदर्शन के बाद विदेशी दौरों पर सख्त नियम लागू कर सकता है।

बीसीसीआई के नियम होंगे कितने सफल?

ईएसपीएनक्रिकइंफो की रिपोर्ट के मुताबिक, बीसीसीआई विदेशी दौरों पर खिलाड़ियों के अपने परिवार के साथ समय बिताने को सीमित करेगा और 45 दिन के दौरे के दौरान परिवार के सदस्य 14 दिन से ज्यादा समय तक उनके साथ नहीं रह सकेंगे। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया था कि भारतीय खिलाड़ियों को अभ्यास और मैचों के दौरान यात्रा के लिए अलग–अलग ट्रांसपोर्ट का उपयोग करने से भी रोक दिया जाएगा। पूरी टीम को एक ही बस में यात्रा करनी पड़ेगी। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा, मुख्य कोच गौतम गंभीर और मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर को पिछले शनिवार को मुंबई में बीसीसीआई अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान इस बारे में सूचित किया गया था। हालांकि, क्या इस तरह के नियम से भारतीय क्रिकेट की हालत सुधरेगी? यह तो वक्त ही बताएगा।

कमेंटेटर हर्षा भोगले ने रखी यह मांग

अब अनुभवी क्रिकेट कमेंटेटर हर्षा भोगले ने इस पर अपने विचार साझा किए हैं। उन्होंने सुझाव दिया है कि बीसीसीआई को इसके बजाय खिलाड़ियों को व्यक्तिगत पीआर (पब्लिक रिलेशन) एजेंसियां रखने से प्रतिबंधित करना चाहिए। भोगले ने कहा, बीसीसीआई भारतीय टीम के लिए जो बदलाव सुझा रहा है फिलहाल मैं उस बारे में पढ़ रहा था। मुझे नहीं पता कि इस पर कितना विश्वास करना है, लेकिन अगर मुझे सख्ती से लागू होने के लिए एक नियम बताना पड़ा, तो यह टीम के सदस्यों को पीआर एजेंसियों से प्रतिबंधित करना होगा।

भारतीय टीम के प्रदर्शन से नाखुश है बीसीसीआई

ऑस्ट्रेलिया से हार के बाद रोहित और विराट कोहली जैसे सीनियर खिलाड़ी सीरीज के दौरान बल्ले से खराब प्रदर्शन के बाद सवालों के घेरे में आ गए हैं। रोहित जहां तीन मैचों और पांच पारियों में 6.20 की औसत से सिर्फ 31 रन ही बना पाए, वहीं विराट कोहली ने सीरीज का अंत पांच मैचों में नौ पारियों में 23.75 की औसत से 190 रन बनाकर किया। यहां तक कि मुख्य कोच के रूप में भी गंभीर का भविष्य निश्चित नहीं है। बीसीसीआई फरवरी–मार्च में चौंपियंस ट्रॉफी के बाद उनकी स्थिति पर फैसला कर सकता है।

विराट कोहली– जो रुट स्मिथ और विलियमसन के बाद नई पीढ़ी के ये खिलाड़ी होंगे FAB-4, एक भारतीय शामिल

मौजूदा समय में टेस्ट क्रिकेट में चार खिलाड़ी फैब–4 में हैं। इनमें जो रूट, केन विलियमसन, विराट कोहली और स्टीव स्मिथ शामिल हैं। वहीं पूर्व इंग्लिश खिलाड़ी नासिर हुसैन और माइकल एथर्टन ने नई पीढ़ी के फैब फो बल्लेबाजों को चुना है। इसमें भारत के यशस्वी जायसवाल और हैरी ब्रूक के अलावा कुछ प्लेयर शामिल हैं। माइकल वॉन ने पाकिस्तान के उभरतेहुए स्टार सैम अयूब को इस लिस्ट में रखा है। जबकि एथर्टन ने अपनी लिस्ट में दो उभरते हुए बाएं हाथ के बल्लेबाज कामिंदू मेंडिस और रचिन रविंद्र को चुना है। फैब फोर शब्द न्यूजीलैंड के पूर्व खिलाड़ी मार्टिन क्रो ने 2010 के दशक की शुरुआत में दिया था। उस दौरान उन्होंने ऐसे नाम चुने जिनके बारे में उन्हें लगता था कि वे अगल कुछ सालों तक वर्ल्ड क्रिकेट पर राज करेंगे। उन्होंने भारत के विराट कोहली, इंग्लैंड के जो रूट, न्यूजीलैंड के केन विलियमसन और ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ को चुना। अब ये सभी खिलाड़ी अपने करियर के आखिरी पड़ाव पर हैं, ऐसे में अगली पीढ़ी के फैब फोर को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। स्काई स्पोर्ट्स क्रिकेट पॉडकास्ट पर बात करते हुए हुसैन ने जायसवाल और ब्रूक को चुनने के बाद कहा कि, सैम अयूब को अभी चोट लगी है और ये निश्चित नहीं है कि वह चौंपियंस ट्रॉफी के लिए फिट होंगे या नहीं, लेकिन वह सभी फॉर्मेट में पाकिस्तान के लिए टॉप ऑर्डर में एक डायनामिक खिलाड़ी हो सकते हैं। वहीं हुसैन ने ऑस्ट्रेलिया के ट्रैविस हेड को अपने आखिर चयन के रूप में चुना है इससे पहले एथर्टन ने उन्हें बताया कि 31 साल के हेड अपनी उम्र के कारण इसमें फिट नहीं बैठते हैं। एथर्टन ने श्रीलंका के कामिंडू मेंडिस और न्यूजीलैंड के ऑलराउंडर रचिन रविंद्र के साथ–साथ जायसवाल और ब्रूक को नए फैब फोर के रूप में चुना।

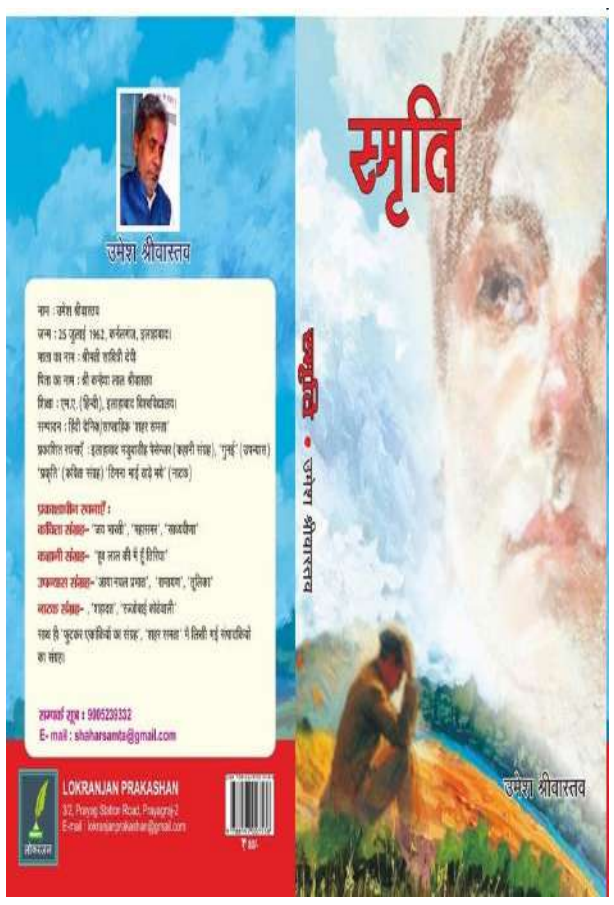

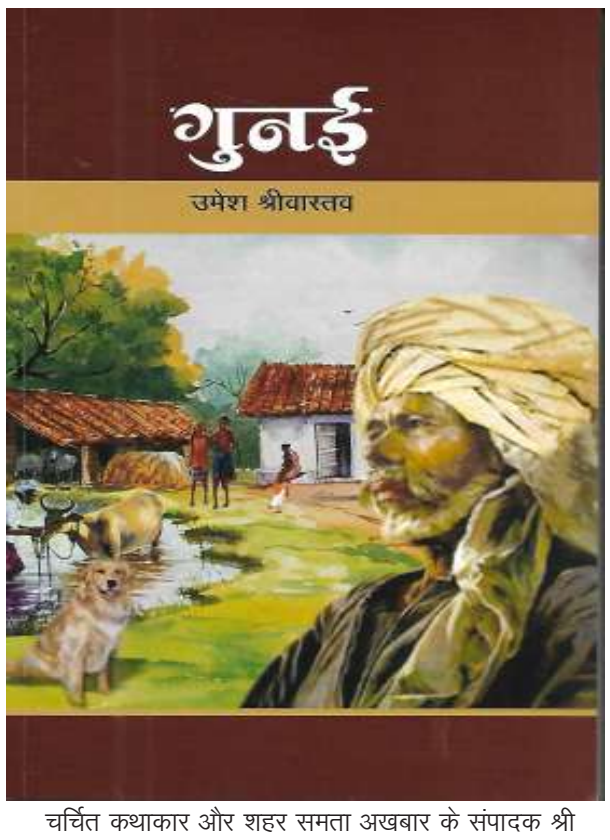

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

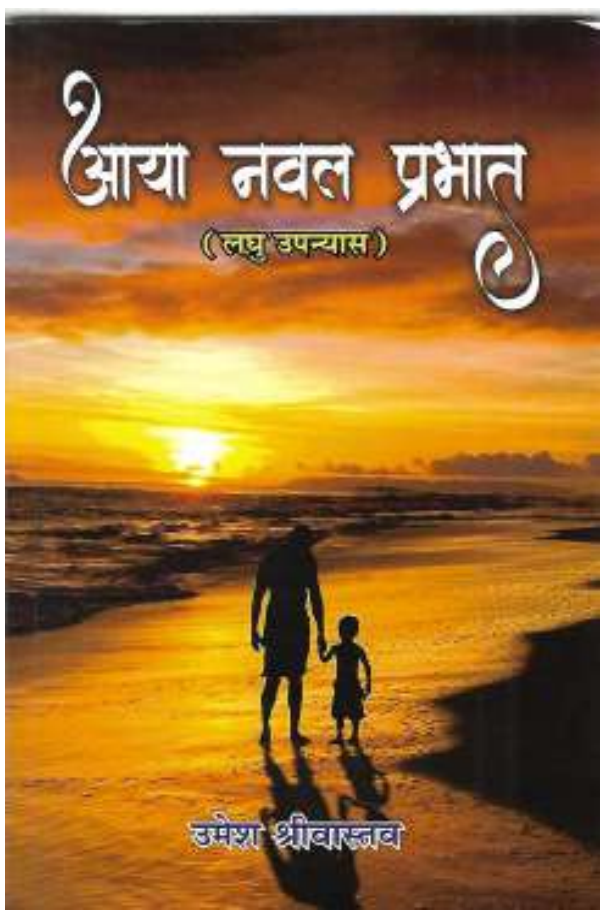

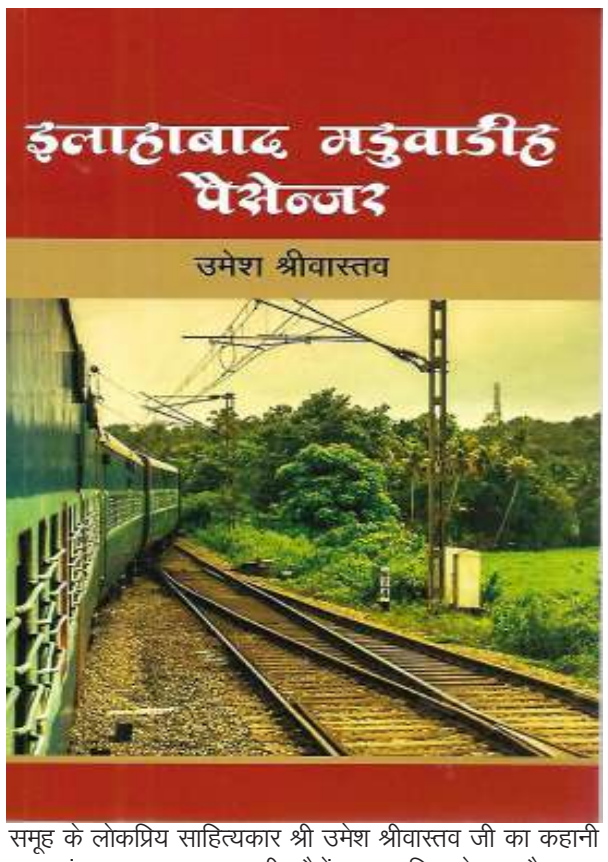

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

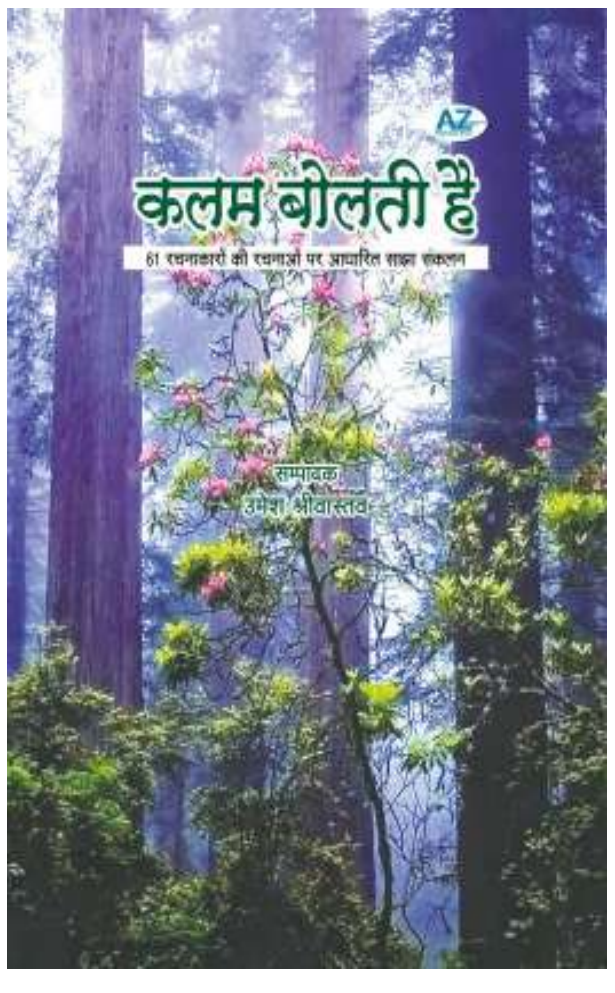

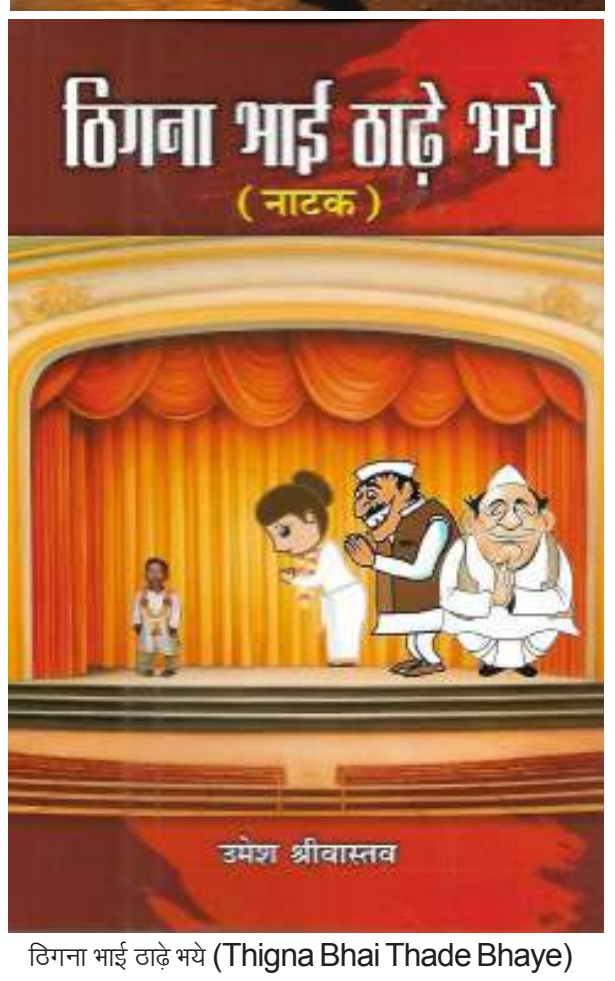

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

घुटनों के बल आए, गाना भी गाया, इस देश के प्रधानमंत्री का जॉर्जिया मेलोनी को बर्थ डे विश करने का अंदाज जमकर हो रहा वायरल

अपना 48वां जन्मदिन मना रहीं इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी उस वक्त आश्चर्यचकित हो गईं जब अल्बानियाई प्रधानमंत्री एडी रामा ने उन्हें बर्थ डे विश करने के लिए अपने घुटनों पर आ गए। एजी रामा ने इतालवी समकक्ष जियोर्जिया मेलोनी को एक स्कार्फ का उपहार दिया और उनका स्वागत

किया। जब दोनों नेता अबू धाबी में विश्व भविष्य ऊर्जा शिखर सम्मेलन में शामिल हुए तो रामा उन्हें गिफ्ट देने के लिए घुटनों के बल बैठ गए और तांती औगुरी (जन्मदिन मुबारक) गाया। रामा ने मेलोनी को बताया इस खास स्कार्फ को एक इतालवी डिजाइनर ने बनाया था, जो अल्बानिया में रहने लगा था। विपरीत राजनीतिक मान्यताओं के बावजूद दोनों नेताओं के बीच अच्छे कामकाजी संबंध हैं। मेलोनी इटली के दक्षिणपंथी ब्रदर्स का नेतृत्व करते हैं जबकि रामा अल्बानिया की सोशलिस्ट पार्टी के प्रमुख हैं। मेलोनी ने पिछले साल इटली द्वारा समुद्र से उठाए गए कुछ प्रवासियों को अल्बानिया के हिरासत केंद्रों में भेजने के लिए रामा के साथ एक समझौता किया था। योजना की कानूनी चुनौतियों के कारण केंद्र वर्तमान में निष्क्रिय हैं। इटली, अल्बानिया और संयुक्त अरब अमीरात ने एड्रियाटिक में नवीकरणीय ऊर्जा के लिए एक उप–समुद्र इंटरकनेक्शन बनाने के लिए कम से कम 1 बिलियन यूरो ($ 1 बिलियन) के समझौते पर हस्ताक्षर किए।

जेफ बेजोस की कंपनी का अंतरिक्ष में बड़ा कदम, न्यू ग्लेन रॉकेट का किया गया सफलतापूर्वक प्रक्षेपण

जेफ बेजोस के स्पेस वेंचर ब्लू ओरिजिन ने 16 जनवरी को फ्लोरिडा के केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से न्यू ग्लेन रॉकेट को सफलतापूर्वक लॉन्च किया। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार, मौसम की स्थिति और तकनीकी चुनौतियों की वजह से इसकी लॉन्चिंग में देरी हुई। लेकिन इसकी सफल लॉन्चिंग कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। 320 फीट लंबा न्यू ग्लेन रॉकेट पुनरू प्रयोज्यता का प्रदर्शन करके स्पेसएक्स के फाल्कन 9 के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार है। इस रॉकेट का प्रमुख उद्देश्य अंतरिक्ष मिशनों में पुनः उपयोगिता को बढ़ावा देना है, जिससे लॉन्च की लागत में कमी आए और अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए दक्षता में वृद्धि हो। न्यू ग्लेन रॉकेट एक ठोस कदम है ब्लू ओरिज़न के पुनः उपयोगी रॉकेट कार्यक्रम में, जो भविष्य में अंतरिक्ष यात्रा को अधिक सस्ता और स्थिर बनाएगा। एनजी–1 नाम के इस मिशन का उद्देश्य ब्लू रिंग पाथफाइंडर परीक्षण उपग्रह को कक्षा में स्थापित करके और रॉकेट के बूस्टर को अटलांटिक महासागर में एक ड्रोन जहाज पर उतारकर रॉकेट की क्षमताओं का प्रदर्शन करना था। न्यू ग्लेन का प्रक्षेपण नासा और अमेरिकी रक्षा विभाग जैसे ग्राहकों के लिए 10 बिलियन डॉलर के अनुबंधों के बैकलॉग को पूरा करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। ब्लू ओरिजिन भी नासा के आर्टेमिस कार्यक्रम का एक हिस्सा है, जिसका उद्देश्य मनुष्यों को चंद्रमा पर भेजना है, और रॉकेट की सफलता उन्हें मस्क के स्पेसएक्स के साथ एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में मजबूत करने में मदद करेगी। बेजोस ने ब्लूमबर्ग से कहा कि अंतरिक्ष के लिए नए उपयोग होने जा रहे हैं जिससे बड़ी क्षमता की मांग बढ़ने वाली है।

खनिकों–पुलिस के बीच गतिरोध में 87 की मौत, बचाव अभियान में 240 लोगों को खदान से निकाया गया बाहर

जोहान्सबर्ग, एजेंसी। दक्षिण अफ्रीका में एक सोने की खदान में अवैध रूप से भूमिगत काम करने के दौरान फंसे खनिकों और पुलिस के बीच एक महीने से जारी गतिरोध में मरने वालों की संख्या कम से कम 87 हो गई है। पुलिस ने बताया कि उन्होंने एक बचाव अभियान चलाकर 240 से अधिक जीवित लोगों को खदान से बाहर निकाला। राष्ट्रीय पुलिस प्रवक्ता एथलेंडा माथे ने कहा कि सोमवार से शुरू हुए बचाव अभियान में खदान से 78 शव निकाले गए, जबकि नौ अन्य शव पहले ही बरामद किए गए थे। राष्ट्रीय पुलिस प्रवक्ता एथलेंडा माथे ने फिलहाल इस बात का विवरण नहीं दिया कि शव कैसे निकाले गए। कम्यूनिटी ग्रुप ने कहा कि उन्होंने अपने बचाव के प्रयास खुद शुरू किए थे, क्योंकि पिछले साल अधिकारियों ने कहा था कि वे खनिकों की मदद नहीं करेंगे, क्योंकि वे अपराधी है। खनिकों की मौत का कारण भूख और निर्जलीकरण को बताया जा रहा है। अधिकारियों का मानना है कि लगभग दो हजार खनिक पिछले साल अगस्त से जोहान्सबर्ग के दक्षिण–पश्चिम में बफेल्सफोंटेन गोल्ड माइन में अवैध रूप से काम कर रहे थे। पुलिस ने बताया कि सभी जीवित लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्होंने बुधवार को बचाव अभियान समाप्त करने की घोषणा की। उनका मानना है कि अब कोई भी भूमिगत नहीं है। इसकी पुष्टि के लिए गुरुवार को एक कैमरा खदान में भेजा जाएगा। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि बचाव अभियान से पहले कम से कम 13 बच्चे भी खदान से बाहर निकाले गए। पुलिस ने बताया कि अधिकांश खनिक पड़ोसी देशों के रहने वाले हैं।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

ट्रंप के शपथ से 5 दिन पहले हो गया सबसे बड़ा समझौता, रिहा होंगे बंधक, थमेगी जंग, 15 महीने बाद गाजा में लौटेगी शांति

कतर, मिस्र और संयुक्त राज्य अमेरिका ने बड़ी घोषणा करते हुए जानकारी दी है कि इज़राइल और हमास युद्धविराम और बंधक रिहाई समझौते पर पहुंच गए हैं। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और नव–निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से बात की और गाजा में बंधकों की रिहाई के लिए समझौता कराने में मदद करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। समजौते की रूपरेखा में बंधकों और कैदियों की रिहाई, आबादी वाले क्षेत्रों से इजरायली बलों की वापसी और मानवीय सहायता कार्यों को फिर से शुरू करना शामिल है।

समझौते में क्या क्या

इस समझौते में हमास की ओर से चरणबद्ध तरीके से बंधकों की रिहाई, इजराइल में सैकड़ों फलस्तीनी कैदियों की रिहाई और गाजा में विस्थापित हजारों लोगों को वापस लौटने की अनुमति देना शामिल है। समझौते के तहत, क्षेत्र में अत्यंत आवश्यक मानवीय सहायता भी पहुंचाई जाएगी।

नेतन्याहू का क्या है कहना

समझौते के तहत, क्षेत्र में अत्यंत आवश्यक मानवीय सहायता भी पहुंचाई जाएगी। अमेरिका के तीन अधिकारियों और हमास के एक अधिकारी ने पुष्टि की कि समझौता हो गया है। दूसरी ओर इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने कहा कि समझौते का अंतिम विवरण अभी भी तैयार किया जा रहा है। दोहा में मौजूद तीनों अमेरिकी अधिकारियों और हमास ने नाम सार्वजनिक नहीं करने की शर्त पर यह जानकारी दी। नेतन्याहू के कार्यालय ने एक बयान में कहा कि उसे उम्मीद है कि समझौते के विवरण को आज रात अंतिम रूप दे दिया जाएगा।

हमास का अटैक

हमास ने सात अक्टूबर, 2023 को इजरायल पर हमला कर दिया था, जिसमें 1,200 लोग मारे गए थे और 250 अन्य को बंधक बना लिया गया था। इसके बाद इजराइल ने जवाबी हमले किये, जिसमें फलस्तीनी स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार 46,000 से अधिक फलस्तीनी मारे गए थे। इसके अलावा गाजा की अनुमानित 90 प्रतिशत आबादी विस्थापित हो गई और मानवीय संकट पैदा हो गया। नवंबर 2023 में हुए एक सप्ताह के संघर्ष विराम के दौरान गाजा से 100 से अधिक बंधकों को रिहा किया गया था।

गाजा के साथ संघर्ष विराम समझौता अभी पूरा नहीं : नेतन्याहू

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बुधवार देर रात कहा कि हमास के साथ संघर्ष विराम समझौता अभी पूरा नहीं हुआ है तथा इसे अंतिम रूप देने पर काम किया जा रहा है। नेतन्याहू के इस बयान से कुछ घंटे पहले ही अमेरिका और कतर ने समझौते की घोषणा की थी जो गाजा में 15 महीने से बनी हुई युद्ध की विनाशकारी स्थिति को थामेगा और बड़ी संख्या में बंधकों के रिहा होने का रास्ता साफ करेगा। इस संघर्ष ने पश्चिम एशिया को अस्थिर कर दिया है और दुनियाभर में इसे लेकर प्रदर्शन हुए हैं। समझौते की घोषणा के बाद बड़ी संख्या में फलस्तीनी सड़कों पर उतरे और उन्होंने खुशी मनाई। मध्य गाजा के दीर अल बलाह में महमूद वादी ने कहा, ''इस समय हम जो महसूस कर रहे हैं, कोई नहीं कर सकता। इसे बयां नहीं किया जा सकता।'' हमास ने सात अक्टूबर, 2023 को इजराइल पर हमला कर दिया था, जिसमें 1,200 लोग मारे गए थे और 250 अन्य को बंधक बना लिया गया था। इसके बाद इजराइल ने जवाबी हमले किये, जिसमें फलस्तीनी स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार 46,000 से अधिक फलस्तीनी मारे गए। इसके अलावा गाजा की अनुमानित 90 प्रतिशत आबादी विस्थापित हो गई और मानवीय संकट पैदा हो गया। नेतन्याहू ने स्पष्ट रूप से नहीं बताया है कि वह कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल सानी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा कुछ घंटे पहले घोषित समझौते को स्वीकार करते हैं या नहीं। नेतन्याहू ने एक बयान में कहा कि वह समझौते का अंतिम ब्योरा पूरा होने के बाद ही औपचारिक प्रतिक्रिया जारी करेंगे। समझौते के विवरण को इस समय अंतिम रूप दिया जा रहा है। कतर की राजधानी दोहा में समझौते के लिए कई सप्ताह से वार्ताएं हो रही थीं।

इस तरह की उकसावे वाली टिप्पणियां हानिकारक... भारतीय सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी और रक्षा मंत्री के बयान पर तिलमिलाया पाकिस्तान

आर्मी चीफ की तरफ से एलएसी से लेकर एलओसी तक देश को दुश्मनों को कड़ा संदेश दिया गया। लेकिन आर्मी चीफ के बयान के बाद पाकिस्तान तिलमिलाता नजर आ रहा है। पाकिस्तान को आतंकवाद का केंद्र बताए जाने के बाद पाकिस्तानी सेना ने एक बयान जारी किया है। पाकिस्तानी सेना और विदेश कार्यालय ने भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी के उस बयान को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने कहा था कि इस्लामाबाद अपने पड़ोस में आतंकवाद का इंजन है, यह अत्यधिक दोहरेपन का क्लासिक मामला है। भारतीय सेना प्रमुख का यह कहना कि पाकिस्तान आतंकवाद का केंद्र है, न केवल तथ्यों के विपरीत है, बल्कि भारत की डिफ़ॉल्ट स्थिति को मात देने की निरर्थक कवायद भी है – राज्य प्रायोजित क्रूरता की आंतरिक प्रतिक्रियाओं के लिए पाकिस्तान को दोषी ठहराना। पाकिस्तानी सेना ने एक बयान में पाकिस्तान के आतंकवाद का केंद्र होने संबंधी जनरल द्विवेदी

की टिप्पणी को खारिज किया। उसने कहा कि इस तरह के राजनीति से प्रेरित और भ्रामक बयान भारतीय सेना के अत्यधिक राजनीतिकरण को दर्शाते हैं। पाकिस्तानी सेना ने कहा कि पाकिस्तान ऐसी बेबुनियाद टिप्पणियों पर कड़ी आपत्ति जताता है। पाकिस्तान में गैर–मौजूद आतंकवादी ढांचे की कल्पना करने के बजाय आत्म–भ्रम में न पड़ना और जमीनी हकीकत की सराहना करना बुद्धिमानी होगा। वहीं, पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने कहा कि भारतीय नेतृत्व की ऐसी बयानबाजी जम्मू–कश्मीर में कथित मानवाधिकार उल्लंघनों से अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान नहीं भटका सकती। विदेश कार्यालय ने कहा कि जम्मू–कश्मीर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत विवादित क्षेत्र है, जिसकी अंतिम स्थिति संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रासंगिक प्रस्तावों और कश्मीरी लोगों की आकांक्षाओं के अनुसार निर्धारित की जानी है। उसने कहा कि भारत के पास पीओके और गिलगित–बाल्टिस्तान के क्षेत्रों पर दावा करने का कोई कानूनी या नैतिक आधार नहीं है। पाकिस्तान ने कहा कि इस तरह की उकसावे वाली टिप्पणियां" क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए हानिकारक हैं। पाकिस्तान ने कहा कि इस तरह की उकसावे वाली टिप्पणियां क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए हानिकारक हैं।

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति से 10 घंटे तक अधिकारियों ने की पूछताछ, यून ने नहीं दिए सवालों के जवाब

सियोल, एजेंसी। दक्षिण कोरिया में महाभियोग का सामना कर रहे राष्ट्रपति यून सुक येओल भ्रष्टाचार विरोधी जांचकर्ताओं के सवालों के जवाब नहीं दिए। यून के वकीलों ने गुरुवार को एक बार फिर कहा कि जांच अवैध है। भ्रष्टाचार जांच कार्यालय के मुख्यालय में अधिकारियों ने यून से 10 घंटे तक पूछताछ की, लेकिन उन्होंने किसी सवाल का जवाब नहीं दिया। वहीं सियोल सेंट्रल जिला न्यायालय में यून की रिहाई याचिका पर सुनवाई हुई। दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने 3 दिसंबर को मार्शल लॉ के एलान से जुड़े मामलों में कार्रवाई करते हुए बुधवार को यून सुक येओल को गिरफ्तार किया था। इसके लिए जांचकर्ताओं और पुलिस को समर्थकों के विरोध का सामना करना पड़ा था। इससे पहले भी जांच एजेंसी ने दो बार यून को गिरफ्तार करने की कोशिश की थी। भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसी और पुलिस संयुक्त रूप से यून के मामले की जांच करेंगे कि क्या तीन दिसंबर को यून द्वारा कुछ समय के लिए लागू किया गया मार्शल लॉ विद्रोह के समान था? अब यून से पूछताछ कर रही जांच एजेंसी के पास उनकी औपचारिक गिरफ्तारी के लिए अदालती आदेश का अनुरोध करने या उन्हें रिहा करने के लिए 48 घंटे का समय है। वहीं यून के वकीलों का कहना है कि सियोल पश्चिमी जिला न्यायालय द्वारा जारी किया गया हिरासत वारंट अवैध है। वकीलों का कहना है कि केवल अदालत की सुनवाई के बाद ही गिरफ्तारी वारंट जारी किया जा सकता है। उन्होंने सियोल सेंट्रल जिला न्यायालय से यून की रिहाई पर विचार करने को कहा है। कोर्ट उनकी याचिका पर सुनवाई कर रहा है। राष्ट्रपति के वकील सेओक डोंग–हियोन ने कहा कि सुरक्षा कारणों से यून गुरुवार को केंद्रीय जिला न्यायालय में सुनवाई में शामिल नहीं हुए। माना जा रहा है याचिका पर शाम तक फैसला आने की उम्मीद है। सुनवाई के दौरान पुलिस बल की मौजूदगी के बीच यून के सैकड़ों समर्थक अदालत के पास सड़कों पर जमा रहे। उन्होंने बैनर लहराते हुए यून की रिहाई की मांग को लेकर नारे लगाए। अब यून का भाग्य सांविधानिक न्यायालय के हाथों में है। न्यायालय इस पर विचार कर रहा है कि क्या यून को औपचारिक रूप से पद से हटाया जाए या आरोपों को खारिज करके उन्हें बहाल किया जाए। यदि न्यायालय यून की औपचारिक गिरफ्तारी के लिए वारंट जारी करता है, तो भ्रष्टाचार विरोधी जांचकर्ता उनकी हिरासत अवधि को 20 दिनों तक बढ़ा सकते हैं। आपराधिक कानून में विशेषज्ञता रखने वाले वकील पार्क सुंग–बे ने कहा कि अगर विद्रोह और सत्ता के दुरुपयोग के संभावित आरोपों पर यून पर अभियोग लगाया जाता है तो वह अदालती फैसले तक गिरफ्तार रह सकते हैं। दक्षिण कोरिया के कानून के तहत अगर किसी विद्रोह के नेता को दोषी ठहराया जाता है तो उसे मौत की सज़ा या आजीवन कारावास की सजा हो सकती है।

तीन दिसंबर को यून ने लगाया था मार्शल लॉ

यून की ओर से 3 दिसंबर को मार्शल लॉ के एलान ने दक्षिण

कोरियाई लोगों को सकते में डाल दिया था। हालांकि मार्शल लॉ केवल कुछ घंटे तक ही लागू रहा, लेकिन इसने देश की राजनीति, कूटनीति और वित्तीय बाजारों में हलचल मचा दी। इसके बाद एशिया के सबसे जीवंत लोकतंत्रों में से एक देश ने अचानक से अभूतपूर्व राजनीतिक उथल–पुथल का दौर देखा। इसके बाद 14 दिसंबर को सांसदों ने उन पर महाभियोग चलाने और उन्हें पद से हटाने के लिए मतदान किया। इसके बाद सियोल पश्चिमी जिला न्यायालय ने यून को हिरासत में लेने का वारंट 31 दिसंबर को जारी किया था, क्योंकि वह पूछताछ के लिए जांच अधिकारियों के समक्ष पेश नहीं हो रहे थे। जब जांच एजेंसी और पुलिस यून को गिरफ्तार करने पहुंची तो उनके समर्थक और राष्ट्रपति सुरक्षा सेवा ने विरोध किया था। इस दौरान यून के वकीलों ने एक कानून का हवाला देते हुए कहा था कि भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसी के पास विद्रोह के आरोपों की जांच करने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है।

बलूचिस्तान से सात लोगों को पाकिस्तानी सेना ने किया अगवा, घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने किया प्रदर्शन

बलूचिस्तान, एजेंसी। पाकिस्तान की सेना पर बलूचिस्तान के कई इलाकों से कई लोगों को अगवा करने आरोप लगाया गया है। वहीं इस मामले को लेकर कई इलाकों में लोगों की तरफ से बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किया जा रहा है। बलूचिस्तान पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, बलूचिस्तान के कई हिस्सों से पाकिस्तानी सेना की तरफ से कथित तौर पर कम से कम सात लोगों को अगवा किया गया है, जिससे पूरे इलाके में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुआ है।

पंजगुर और खुजदार जिले में विरोध–प्रदर्शन

बलूचिस्तान पोस्ट के अनुसार, दो व्यक्तियों – नजीर के बेटे मुजीर और अहमद के बेटे जसीम को कल देर रात पंजगुर के सैदान इलाके से पाकिस्तानी सेना ने अगवा कर लिया। इसके जवाब में, उनके परिवारों ने अपने प्रियजनों की तत्काल रिहाई की मांग को लेकर सैदान में सड़कें जाम कर और ट्रैफिक रोककर धरना प्रदर्शन किया है। बलूचिस्तान पोस्ट ने आगे बताया है कि खुजदार जिले में भी विरोध प्रदर्शन हुए हैं, जहां निवासी जबरन गायब हुए लोगों की बरामदगी की मांग कर रहे हैं। हाल ही की एक घटना में, पाकिस्तानी सेना ने रुस्तम खान के बेटे मोहम्मद सलीम के अपहरण का प्रयास किया, जब वह जेहरी तरासानी में अपने मवेशियों की देखभाल कर रहा था। हालांकि, स्थानीय निवासियों और सलीम के परिवार ने हस्तक्षेप कर अपहरण को रोक दिया। इसके बावजूद, सलीम का परिवार उसकी सुरक्षा को लेकर डरा हुआ है और उन्होंने बिलाल बलूचियों को चेतावनी दी है कि अगर उसे कोई नुकसान पहुंचा तो वे सरकार को जिम्मेदार ठहराएंगे। खुजदार में भी 12 लोगों को किया गया अगवा पिछले कुछ दिनों में, खुजदार तहसील में कथित तौर पर 12 व्यक्तियों को अगवा किया गया, जिससे परिवारों ने विरोध में सड़कें जाम कर दीं। तुर्बत में इसी तरह की घटनाओं ने और अशांति फैला दी है। बताया जाता है कि पाकिस्तानी सेना ने सुबह 2 बजे के आसपास न्यू बहमन दन्नुक में घरों पर छापा मारा और हैदर अली के बेटे बिलाल बलूच और हैर।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।